निःशुल्क वितरण के लिए

कार्य शिक्षा

चौथी कक्षा

कार्यशिक्षण इयत्ता चौथी (हिंदी माध्यम)

टेली मानस हेल्पलाइन

Tele MANAS (Tele Mental Health Assistance and Networking Across States)

(१४४१६/१८००-८९-१४४१६)

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्र द्वारा प्रायोजित योजना `टेली मानस` महाराष्ट्र राज्य में अक्तूबर २०२२ से कार्यान्वित की गई है। 'टेली मानस' कार्यक्रम के अंतर्गत हेल्पलाइन नंबर १४४१६ द्वारा नि:शुल्क एकात्मिक और सर्वसमावेशक मानसिक स्वास्थ्य सेवा २४x७ प्रदान की जाती है। इसमें विविध मानसिक समस्याओं के लिए विशेषज्ञों द्वारा उपचार और समुपदेशन किया जाता है। 'टेली मानस' हेल्पलाइन पर आपके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णत: गोपनीय रखा जाता है। इस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याएँ हेल्प लाइन नंबर पर कॉल करके नि:संकोच बताएँ। तथा मन में उत्पन्न किसी भी शंका के संबंध में पूछकर उसके निराकरण और अपनी समस्या से संबंधित मार्गदर्शन प्राप्त करें और अन्य लोगों को भी इस सुविधा का लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करें।

मनोदर्पण

शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद के अंतर्गत जुलाई २०२० से मनोदर्पण (८४४८४४०६३२) हेल्पलाइन की नि:शुल्क दूरध्वनि सेवा आरंभ की गई है। यह सुविधा विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तथा सहायता प्रदान करने हेतु प्रतिदिन प्रात: ८ बजे से संध्या ८ बजे की कालावधि में उपलब्ध कराई गई है। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक हेल्पलाइन पर संपर्क करके मार्गदर्शन एवं समुपदेशन प्राप्त कर सकते हैं।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.०४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. १३.०४.२०२६ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक शैक्षणिक वर्ष २०२६-२०२७ से निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई है।

कार्य शिक्षा

चौथी कक्षा

समग्र शिक्षा

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४

चौखट में दिए गए Q.R.Code को स्मार्ट फोन द्‌वारा स्कैन करने पर तुम्हें डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यपुस्तक में दिए घटकों से संबंधित दृक, श्रव्य एवं दृक-श्रव्य रूप में अध्ययन-अध्यापन सामग्री भी उपलब्ध होगी।

प्रथमावृत्ति
२०२६

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे ४११ ००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

✲ कार्य शिक्षा समिति सदस्य ✲

श्रीमती पल्लवी आपटे	(अध्यक्ष)
श्रीमती लिना तलाठी	(सदस्य)
श्रीमती तेजस्विनी म्हस्के	(सदस्य)
श्रीमती वंदना फडतरे	(सदस्य)
श्री सुनिल मोरे	(सदस्य)
डॉ. रुपेश तांबे	(सदस्य)
श्रीमती गीतांजली काशिद	(सदस्य)
श्री अंकित देशमुख	(निमंत्रित सदस्य)
श्रीमती रश्मी राजपूरकर	(निमंत्रित सदस्य)
श्री प्रकाश पारखे	(निमंत्रित सदस्य)
श्री विद्याधर म्हात्रे	(निमंत्रित सदस्य)
श्रीमती दिपाली जोगदंड	(अभ्यासक्रम समन्वयक)
डॉ. अजयकुमार लोळगे	(सदस्य सचिव)

✲ संयोजक ✲

डॉ. अजयकुमार लोळगे
विशेषाधिकारी, कार्यानुभव (वि.का)
प्र. विशेषाधिकारी, कला

✲ हिंदी भाषांतर संयोजन ✲

डॉ. अलका पोतदार
विशेषाधिकारी हिंदी (वि.का.)

✲ भाषांतर विषयतज्ञ ✲

श्री रामहित यादव
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
श्री ज्ञानेश्वर सोनार

कागज : ७० जीएसएम, क्रिमवोव
मुद्रणादेश :
मुद्रक :

✲ गुणवत्ता समीक्षक ✲

डॉ. एम. जी. गुरव	(गुणवत्ता परीक्षक)
ऍड. संदेश साखरे	(विधितज्ञ)
डॉ. अतुल जाधव	(CWSN तज्ञ)

✲ निर्मिति ✲

श्रीमती मिताली शितप
प्र. मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री प्रशांत हरणे
निर्मिति अधिकारी

✲ मुखपृष्ठ एवं अंतर्गत चित्राकृति ✲

श्री लक्ष्मीकांत काळे
श्रीमती प्राजक्ता केरकर

✲ अक्षरांकन ✲

समृद्धी, पुणे

✲ प्रकाशक ✲

श्री हेमंत बाबर
प्र. नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई - २५

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

भारत का संविधान
भाग ४ क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद ५१ क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;
(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;
(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक हैं, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयुवाले अपने, यथास्थिति बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करें।

राष्ट्रगान

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

राज्यगीत

जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।धृ।।

भिती न आम्हा तुझी मुळी ही गडगडणाऱ्या नभा
अस्मानाच्या सुलतानीला जबाब देती जिभा
सह्याद्रीचा सिंह गर्जतो शिव शंभू राजा
दरी दरीतून नाद गुंजला महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा ।।१।।

काळ्या छातीवरी कोरली, अभिमानाची लेणी
पोलादी मनगटे खेळती, खेळ जीवघेणी
दारिद्र्याच्या उन्हात शिजला
निढळाच्या घामाने भिजला
देश गौरवासाठी झिजला
दिल्लीचे ही तख्त राखितो, महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा, गर्जा महाराष्ट्र माझा
जय जय महाराष्ट्र माझा ।।२।।

प्रस्तावना

प्रिय बाल मित्रो,

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के अनुसार चौथी कक्षा की 'कार्यशिक्षा' की यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से तुम्हें 'करके सीखना' और 'अनुभवों से सीखने' का अवसर मिलेगा।

इस पाठ्यपुस्तक में दैनिक जीवन से संबंधित अनेक आनंददायी और उपयुक्त आशय दिए गए हैं। परिवार और परिसर के लोग क्या काम करते हैं, कैसे करते हैं, उसके लिए किन साधनों का उपयोग करते हैं, इस पाठ्यपुस्तक में इसकी जानकारी मिलेगी। इसके साथ ही तुम भी इस कार्य में भाग लेकर नई-नई बातें सीख सकोगे।

समाज में कैसे आचरण करें, 'अच्छी आदतें' कौन-सी हैं, सुरक्षित कैसे रहें, आपातकालीन परिस्थिति में क्या करें, इसके बारे में तुम्हें जानकारी मिलेगी। विभिन्न व्यवसाय, श्रम का महत्त्व और प्रत्येक कार्य का आदर करना कितना आवश्यक है, इसकी भी जानकारी तुम्हें मिलेगी।

पाठ्यपुस्तक के माध्यम से अनेक मनोरंजक उपक्रम प्रत्यक्ष रूप में करने का तुम्हें अवसर मिलेगा, जैसे- कागज कार्य, मिट्टी कार्य, सिलाई कार्य, पाककला, चित्रकला और अन्य छोटे-छोटे उपक्रम आदि। इन उपक्रम से तुम्हारी कल्पनाशक्ति, कौशल और आत्मविश्वास बढ़ेगा। साथ ही खेती, फसल, गृहवाटिका और पर्यावरण के बारे में तुम्हें जानकारी मिलेगी। इससे तुम्हें प्रकृति की जानकारी होगी और उसका महत्त्व तुम्हें समझ में आएगा। यह सीखते हुए तुम प्रश्न पूछोगे, नई चीजों को करके देखोगे और अपने मित्रों के साथ सीखने का आनंद प्राप्त करोगे। ऐसी अपेक्षा है कि अपने अध्यापकों के मार्गदर्शन में ये सभी उपक्रम तुम आनंद से पूर्ण करोगे।

इस पुस्तक में क्या पसंद आया तथा इसमें और क्या समाविष्ट करें, इस संदर्भ में अपने अभिप्राय देना न भूलो। आओ सभी सीखें, कृतियाँ करें और आनंद से आगे बढ़ें!

तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ!

(अनुराधा ओक)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.४

पुणे
दिनांक : १९ अप्रैल २०२६
भारतीय सौर : वैशाख शु. २, शके १९४८
अक्षय तृतीया

शिक्षकों के लिए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के अनुसार शैक्षिक प्रारूप ५+३+३+४ निर्धारित किया गया है। विद्यार्थियों की आयु, रुचि, आवश्यकता और विकास के स्तर को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को अधिक अनुभवों और कौशलों पर आधारित एवं जीवनोपयोगी बनाने पर बल दिया है। इसके अनुसार आधारभूत स्तर के बाद कक्षा तीसरी से पाँचवीं स्तर पर 'कार्य शिक्षा' विषय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की नींव मानी जाती है। यह ध्यान में रखते हुए पहली बार कक्षा चौथी से 'कार्य शिक्षा' पाठ्यपुस्तक की निर्मिति की गई है।

पाठ्यपुस्तक की रचना करते समय कृति और अनुभव पर आधारित पद्धतियों का समावेश किया गया है। कला, सर्जनशीलता व प्रत्यक्ष कृति के माध्यम से बौद्धिक, भावनिक, सामाजिक और शारीरिक विकास प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। विद्यार्थियों के लिए 'करके सीखना', 'अनुभवों से सीखना' और जीवन से जुड़ी हुई शिक्षा, इन तत्त्वों पर आधारित उपक्रमों की प्रस्तुति की गई है।

अभ्यासक्रम उद्देश्य (अ. उ.), अध्ययन क्षमता (अ. क्ष.), अध्ययन निष्पत्ति (अ. नि.) एवं अध्ययन अनुभव के अनुसार विषयों के आशय निश्चित किए गए हैं। विद्यार्थियों को दैनिक जीवन के कार्यों का निरीक्षण करने, विविध अध्ययन सामग्रियों एवं साधनों से परिचित कराने, प्रत्यक्ष कार्यों में सक्रिय सहभाग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। घर, पाठशाला एवं परिसर में वैयक्तिक कार्य, उसके लिए उपयोग किए जाने वाले शैक्षणिक साधनों एवं सामग्रियों को उचित ढंग से कार्य पूरा करने में उनकी भूमिका आदि के लिए विद्यार्थियों को जिम्मेदारी की जानकारी दी जाती है। समाज में व्यवहार के नियम, सकारात्मक आचरण, सामाजिक मूल्य एवं अनुशासन, सामाजिक सुरक्षा तथा आपातकालीन परिस्थितियों की जानकारी आदि विविध घटकों द्वारा विद्यार्थियों में सजग नागरिक भावना विकसित हो, इसके लिए स्थानीय परिसर के पारंपरिक एवं आधुनिक व्यवसाय, संवाद, श्रम का महत्त्व, विविध व्यवसायों के प्रति आदरभाव द्वारा श्रमप्रतिष्ठा व सामाजिक संवेदनशीलता निर्मिति करने का प्रयत्न किया गया है।

खेती के बारे में बुनियादी जानकारी, स्थानीय फसलें, गृहवाटिका, साथ ही खेती से संबंधित व्यवसाय का समावेश करके विद्यार्थियों को पर्यावरण से जोड़ा गया है, जिससे प्रकृति प्रेम, जागरूकता एवं संवर्धन की भावना विकसित होती है। साथ ही उत्पादक कार्य में भाग लेने की आदत बनती है। पाठ्यपुस्तक में विभिन्न कौशलों का परिचय दिया गया है। हस्त कौशल, सिलाई कार्य, कागज काम, मिट्टी कार्य, पाककला, वार्तालाप कौशल, तकनीकी कौशल और कृति पर आधारित उपक्रमों का समावेश किया गया है। ये सभी उपक्रम सृजनशीलता में वृद्धि करने वाले, आत्मनिर्भरता विकसित करने वाले एवं कार्य क्षमता बढ़ाने वाले हैं। उपक्रम करते समय विद्यार्थियों की आयु, स्थानीय परिस्थिति, प्राप्त साधन और विद्यार्थियों की वैयक्तिक गति आदि का विचार करते हुए कल्पनाशीलता एवं नवीनता का उपयोग करना अपेक्षित है। पाठ्यपुस्तक में दिए गए उपक्रम उदाहरण के लिए दिए गए हैं। उनमें आवश्यक परिवर्तन, रूपांतरण या विस्तार करने में आपत्ति नहीं है। अभ्यासक्रम के सभी घटकों का अध्यापन प्रभावी ढंग से होना आवश्यक है। प्रत्येक घटक के नीचे अध्यापकों के लिए अध्यापन संकेत भी दिए गए हैं।

'कार्य शिक्षा' विषय के लिए सरकार द्वारा निर्धारित किए गए कालांश के अनुसार उपक्रमों को रखा गया है। इस विषय में विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन पारंपरिक पद्धति के अतिरिक्त कृति एवं निरीक्षण पर आधारित होना आवश्यक है। विभिन्न मूल्यांकन कसौटियों का उपयोग करते हुए उपक्रम, प्रस्तुति, सहभागिता, सृजनशीलता तथा कौशल इनका विचार करते हुए सतत एवं समग्र मूल्यांकन करना अपेक्षित है।

''विशेष विद्यार्थियों के संबंध में अध्ययन-अध्यापन क्रिया करते समय सांकेतिक भाषा (Sign Language) साथ ही अन्य पूरक अध्यापन पद्धतियों का उपयोग करें। विशेष विद्यार्थियों को उनके भाव प्रकट करना संभव हो, ऐसी पद्धति से प्रस्तुति करने के लिए अवसर प्रदान करें।''

राज्य में अनेक अध्यापक 'कार्य शिक्षा' विषय का अध्यापन प्रभावी ढंग से करने के लिए नवीनतम उपक्रम कर रहे हैं। ऐसे उपक्रमों की जानकारी, अनुभव एवं छायाचित्र पाठ्यपुस्तक मंडल को भेजने की अपेक्षा है। आपकी कल्पना एवं उपक्रमों का मन से स्वागत किया जाएगा।

इक्कीसवीं शताब्दी के विद्यार्थी सक्षम, सर्जनशील, कौशलसंपन्न व जागरूक नागरिक बनें, साथ ही उनमें आत्मनिर्भरता, समस्या समाधान करने की क्षमता एवं सामाजिक जागृति विकसित हो, इस उद्देश्य से इस पाठ्यपुस्तक द्वारा एक महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक कदम उठाया गया है। इस प्रयास का अध्यापक, अभिभावक एवं समाज स्वागत करेगा, यही अपेक्षा है।

कार्य शिक्षा (विषय समिति)
पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

पाठ्यक्रम, अध्ययन क्षमता, घटक

पाठ्यक्रम के उद्देश्य : CG-1 : दैनिक कार्यों के बारे में जानकारी लेना।	
अध्ययन क्षमता : C-1.1 : घर के व्यक्तियों के दैनिक कार्यों के बारे में जानकारी बताना।	**घटक :** कार्य और साधन
उपघटक	**अध्ययन निष्पत्ति (LOs)**
१) दैनंदिन कार्यों का वर्णन।	१) घर के सदस्यों के दैनंदिन कार्यों का निरीक्षण करता है।
२) दैनंदिन कार्यों के लिए आवश्यक उपकरण और सामग्री।	२) दैनंदिन कार्यों के लिए आवश्यक उपकरणों और सामग्रियों की सूची तैयार करता है।
३) कार्यों के अनुसार उपकरणों का वर्गीकरण।	३) कार्यों के अनुसार उपकरणों और सामग्रियों का वर्गीकरण करता है।
४) कार्य में मेरी सहभागिता।	४) दैनंदिन कार्यों में भाग लेता है।
अध्ययन क्षमता : C-1. 2. : परिसर के व्यक्तियों के दैनिक कार्यों के बारे में जानकारी बताना।	**घटक :** परिसर के कार्यों का परिचय।
१) कार्य और सामग्री।	५) परिसर के व्यक्तियों के कार्यों की जानकारी बताता है।
२) परिसर के व्यक्तियों के कार्यों के लिए आवश्यक सामग्री।	६) परिसर के व्यक्तियों के कार्यों के लिए आवश्यक उपकरणों और सामग्रियों की जानकारी बताता है।
३) सार्वजनिक कार्यों में सहभागिता।	७) परिसर के कार्य सुचारू रूप से चलने के लिए अपनी भूमिका अपने शब्दों में बताता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG-2 : सामाजिक जीवन जीते समय सकारात्मक व्यवहार करना।	
अध्ययन क्षमता : C-2. 1. : घर और समाज में रहते हुए सकारात्मक आचरण करना।	**घटक :** समाज
उपघटक	**अध्ययन निष्पत्ति (LOs)**
१) सामाजिक व्यवहार	८) सामाजिक में व्यवहार के नियमों को समझता है।
२) सामाजिक व्यवहार के सकारात्मक नियम	९) सामाजिक व्यवहार के सकारात्मक नियमों के अनुसार आचरण करता है।
३) सामाजिक सुरक्षा नियम	१०) सामाजिक सुरक्षा के नियमों की जानकारी प्राप्त करता है।
४) आपातकालीन स्थिति	११) आपातकालीन परिस्थितियों के बारे में जानकारी देता है।
५) आपातकालीन स्थिति में सकारात्मक विचार	१२) सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से आपातकालीन स्थिति में सकारात्मक व्यवहार करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG-3 : विभिन्न व्यवसायियों/कारीगरों के कार्यों के प्रति उत्सुकता और रुचि दिखाना।	
अध्ययन क्षमता : C-3.1 : परिसर के व्यवसाय और व्यवसायियों के कार्यों की जानकारी प्राप्त करना।	**घटक :** परिसर और व्यवसाय
१) हमारा परिसर	१३) परिवेश के व्यवसायों की जानकारी प्राप्त करता है।
२) परिसर के व्यवसायों का वर्गीकरण	१४) पारंपरिक और आधुनिक व्यवसायों की जानकारी लेकर उनका वर्गीकरण करता है।
३) परिसर के व्यावसायिकों की जानकारी	१५) परिसर के विभिन्न व्यवसायियों का वर्गीकरण करता है।
४) परिसर के व्यावसायिकों से संवाद	१६) परिसर के व्यवसायियों के साथ संवाद स्थापित करता है।
५) श्रमप्रतिष्ठा	१७) श्रमप्रतिष्ठा के महत्त्व को समझता है।
अध्ययन क्षमता : C-3.2 : परिसर के सजीव आधारित उत्पादक कार्यों के बारे में जानना।	**घटक :** परिसर की फसलें
१) स्थानीय फसलें	१८) स्थानीय परिसर में फसल उत्पादन की जानकारी बताता है।
२) गृहवाटिका	१९) गृह वाटिका के बारे में जानकारी बताता है और उत्पादक कार्यों में अपनी सहभागिता दर्ज करता है।
३) कृषिपूरक व्यवसाय	२०) कृषिपूरक व्यवसायों का वर्गीकरण करता है।
पाठ्यक्रम उद्देश्य : CG-4 : विभिन्न कौशलों का विकास करना।	
अध्ययन क्षमता : C-4.1 : हस्त कौशल, संभाषण कौशल और तकनीकी कौशल विकसित करना।	**घटक :** कौशलों की पहचान और विकास.
१) हस्त कौशल	२१) दैनिक कार्यों के लिए आवश्यक कौशल समझता है।
२) संवाद कौशल	२२) दैनिक जीवन में कुशलता से संवाद कौशल का उपयोग करके बातचीत करता है।
३) तकनीकी कौशल	२३) परिचित तकनीकी कौशल का सटीक उपयोग करता है।

विषय सूची

अ.क्र.	घटक	पृष्ठ
१.	दैनिक कार्य	१
२.	दैनिक कार्यों में लगने वालें साधन एवं सामग्री	२
३.	कार्यों में मेरा सहयोग	६
४.	हस्त कौशल – १	८
५.	परिसर के कार्यों की पहचान	१०
६.	कार्य व सामग्री	११
७.	हस्त कौशल – २	१६
८.	मेरी गृहवाटिका	१७
९.	हमारी फसलें	२१
१०.	परिसर स्वच्छ करें	२५
११.	हस्त कौशल – ३	२६
१२.	सामाजिक व्यवहार	२८
१३.	सार्वजनिक कार्यों में सहभाग	३०
१४.	सामाजिक व्यवहार के सकारात्मक नियम	३३
१५.	सामाजिक सुरक्षा	३४
१६.	हस्त कौशल – ४	३६
१७.	आपातकालीन स्थिति	३८
१८.	परिसर और व्यवसाय	४१
१९.	हस्त कौशल – ५	४५
२०.	परिसर के व्यवसायियों की जानकारी	४६
२१.	फूल–पत्तों का वंदनवार (तोरण)	४८
२२.	कृषिपूरक व्यवसाय	४९
२३.	आधुनिक व्यवसाय	५२
२४.	करें मित्रता संगणक से	५३
२५.	क्रय–विक्रय	५६
२६.	संभाषण कौशल	६०
२७.	हस्त कौशल – ६	६१

सूचना : विशेष विद्यार्थियों के संबंध में अध्ययन–अध्यापन क्रिया करते समय सांकेतिक भाषा (Sign Language), साथ ही अन्य पूरक अध्यापन पद्धतियों का उपयोग करें। विशेष विद्यार्थियों को उनके भाव प्रकट करना संभव हो, ऐसी पद्धति से प्रस्तुति करने के लिए अवसर प्रदान करें।

१ दैनिक कार्य

घर में हमें सुरक्षित एवं आरामदायक लगता है। घर के काम व्यवस्थित ढंग से होने के लिए काम में मदद करना परिवार के सभी सदस्यों का कर्तव्य है। मदद करने से घर का काम शीघ्र और अच्छे ढंग से होता है। एक ही व्यक्ति पर काम का तनाव नहीं पड़ता। परिवार का वातावरण आनंददायी रहता है। आओ हम समझें कि परिसर के सदस्य कौन-कौन-से काम करते हैं।

मेरी कृति

१. निम्नलिखित व्यक्ति कौन-कौन-से काम करते हैं, लिखो।

१) चाचा : ____________________

२) चाची : ____________________

३) मामा : ____________________

४) मामी : ____________________

५) बुआ : ____________________

६) मौसी : ____________________

- विद्‍यार्थियों द्‍वारा लिखे गए कार्यों के बारे में चर्चा और बातचीत करें एवं उन कार्यों के महत्त्व को समझाएँ।
- परिवार के सदस्य एवं उनके कार्यों का नाट्‍यीकरण करा लें।

अ. उ. १

अ. क्ष. १.१

अ. नि. १

२ दैनिक कार्यों के लिए लगने वाले साधन एवं सामग्री

दैनिक जीवन में हम अनेक काम करते हैं। इन कार्यों के लिए विभिन्न सामग्री एवं साधनों का उपयोग करते हैं। इन साधनों के कारण हमारे कार्य शीघ्र और आसानी से होते हैं। आओ, ऐसे कुछ साधनों की जानकारी प्राप्त करें।

मेरी कृति

१. दैनिक कार्यों का निरीक्षण करके उनके लिए आवश्यक सामग्री एवं साधनों की सूची तैयार करो।

---

२. तैयार की गई सामग्री एवं साधनों की सूचियों से कार्यों के अनुसार वस्तुओं का वर्गीकरण करो।

साफ–सफाई	बागवानी	रसोई बनाना	अन्य

३. नीचे दिए गए कार्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले साधनों के नाम लिखो।

१) दूध गर्म करने के लिए – ____________

२) भोजन के सभी पदार्थ एक साथ परोसने के लिए – ____________

३) आँगन साफ करने के लिए – ____________

४) गड्ढा खोदने के लिए – ____________

५) अनाज पछोरने के लिए – ____________

६) कूड़ा–कचरा भरकर फेंकने के लिए – ____________

७) चाय छानने के लिए – ____________

८) खाद्‌य पदार्थ संग्रहीत करने के लिए – ____________

- विद्‌यार्थियों को साहित्य और साधनों की पहचान कराएँ।
- घर तथा खेती के साहित्य और साधनों (औजारों) के उपयोग के बारे में चर्चा करें।

अ. उ. १
अ. क्ष. १.१
अ. नि. २

४. उचित जोड़ी मिलाओ।

निःशुल्क वितरण के लिए

- साधन व उनका उपयोग

- घरों के विविध उपकरणों की जानकारी देकर उनका उपयोग बताएँ।
- विशेष कार्यों के लिए विशेष साधनों की आवश्यकता होती है। चर्चा द्वारा समझाएँ।

अ. उ. १
अ. क्ष. १.१
अ. नि. ३

५. चित्र पूरा करो।

६. दी गई शब्द पहेली से दैनिक कामों के लिए आवश्यक साधन एवं सामग्रियों के नाम खोजकर उन्हे गोल करो।

चि	म	टा	त	झा	रा	स
रो	टी	च	वा	बे	ड़ू	ड़
फा	कु	म्म	घ	खु	ल	सी
व	दा	च	क	ला	था	न
ड़ा	ल	कु	क	र	ली	पी
क	टो	री	ड़ा	चा	कू	ढ़ा
क	ल	छी	ही	बा	ल	टी

७. दैनिक कामों के लिए लगने वाले साधन–सामग्रियों के चित्र तुम्हारी कॉपी में चिपकाओ और नीचे उनके नाम एवं उपयोग लिखो।

....

....

....

....

....

३ कार्यों में मेरा सहभाग

घर के छोटे-मोटे काम करके घर के कार्यों में हम अपने बड़ों की मदद कर सकते हैं। इसके कारण 'काम कैसे करें' इसका हमें अनुभव मिलता है। घर के काम करने की आदत पड़ती है एवं हम स्वावलंबी होते हैं।

मेरी कृति

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखो।

- सुबह उठने से लेकर रात सोने तक तुम्हारे घर में कौन-कौन से काम किए जाते हैं?

  ____

  ____

  ____

- माँ-पिता जी को काम करते हुए देखकर उनके किन कामों में मदद करने की तुम्हारी इच्छा होती है?

  ____

  ____

  ____

- घर के किन कामों में तुम मदद करते/ करती हो?

  ____

  ____

  ____

२. घरवालों को मदद हो, ऐसे कौन-से काम तुम करते/करती हो, सामने चौखट में ✔ निशान लगाओ।

१. पाठशाला जाने के लिए स्वयं तैयार होना (गणवेश पहनना, बाल बनाना आदि।) ☐

२. बाजार से लाई गई भाजी (चुनना) अलग-अलग करना। ☐

३. पौधों को पानी देना। ☐

४. सामान का थैला उठाने में मदद करना। ☐

५. ओढ़ने-बिछाने की चादर तह करना। ☐

६. अतिथियों को पानी देना। ☐

- विद्यार्थियों को समझाएँ कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता।
- विभिन्न कामों की सूची तैयार करने से कामों में मदद करने में आसानी होती है। इसका महत्व समझाएँ।

३. आओ, मदद का हाथ बढ़ाओ।

सामग्री : कागज/कार्ड पेपर, स्केच पेन/वैक्स कलर, रंग, पेन्सिल इत्यादि।

कृति : कागज पर हाथ के पंजे का आकार बनाकर प्रत्येक उँगली पर अपनी पसंद के काम का नाम लिखो।

४. आओ, नया काम सीखो।

- पौधा लगाने के लिए गमले में मिट्‍टी भरो और पौधा लगाओ।
- घरेलू कचरे का गीले कचरे और सूखे कचरे में वर्गीकरण करो।

५. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखो।

- तुमने अन्य कौन-से नये काम सीखे?

- अपना घर स्वच्छ और व्यवस्थित रहे, इसके लिए तुम क्या करोगे?

- विद्‍यार्थियों की मदद से तैयार की गई सामग्री कक्षा की दीवार पर लगवाएँ।
- विद्‍यार्थियों द्‍वारा किए गए कार्य या सहायता को पुस्तिका में अंकित करें।
- उपरोक्त कृतियाँ हल करवाकर घर के कामों के बारे में उनसे बातचीत करें।

अ. उ. १
अ. क्ष. १.१
अ. नि. ४

४ हस्त कौशल – १

हमारे देश में अनेक त्योहारों, उत्सवों में रंगोली बनाई जाती है। रंगोली हस्त कौशल का एक सुंदर और आनंददायी प्रकार है।

मेरी कृति

१. रंगोली

नीचे दिए गए साधन और सामग्री का उपयोग करके दिए गए चित्रों की क्रमानुसार रंगोली बनाओ।

साधन और सामग्री : रंगोली, चॉक, खड़िया, मापन पट्‌टी, हाथ पोछने का कपड़ा आदि।

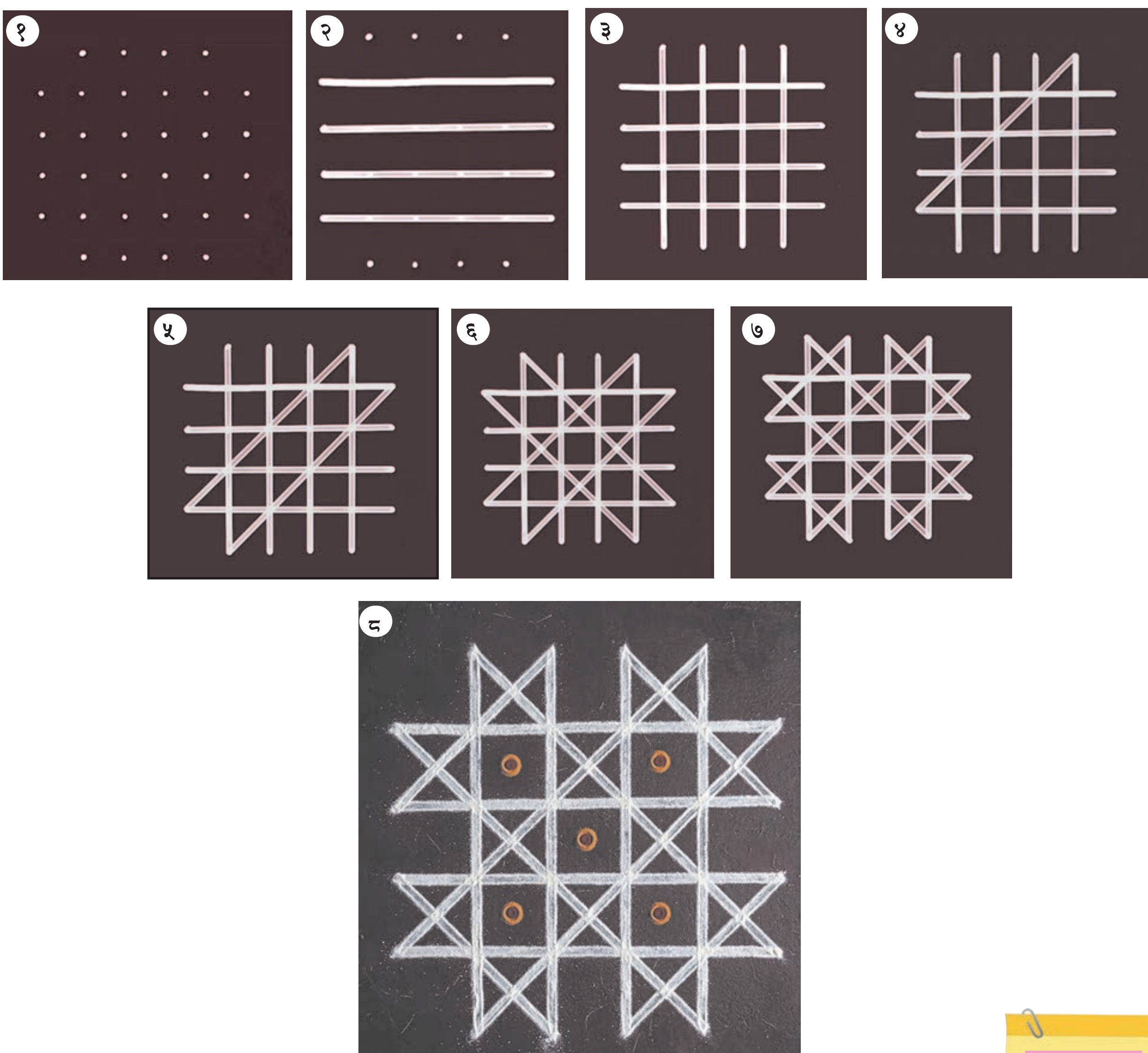

- विभिन्न रंगोलियों का अभ्यास करा लें।
- रंगोली की प्रदर्शनी लगवाएँ।

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २१.२

२. भेंट कार्ड

निम्नलिखित साधन और सामग्री का उपयोग करके दिए गए चित्रों के अनुसार कृतियाँ करके भेंट कार्ड तैयार करो।

साधन और सामग्री: रंगीन कागज, कैंची, पेन्सिल, गोंद, बड़ा सफेद कागज, कुंदन, टिकली, स्केच पेन आदि।

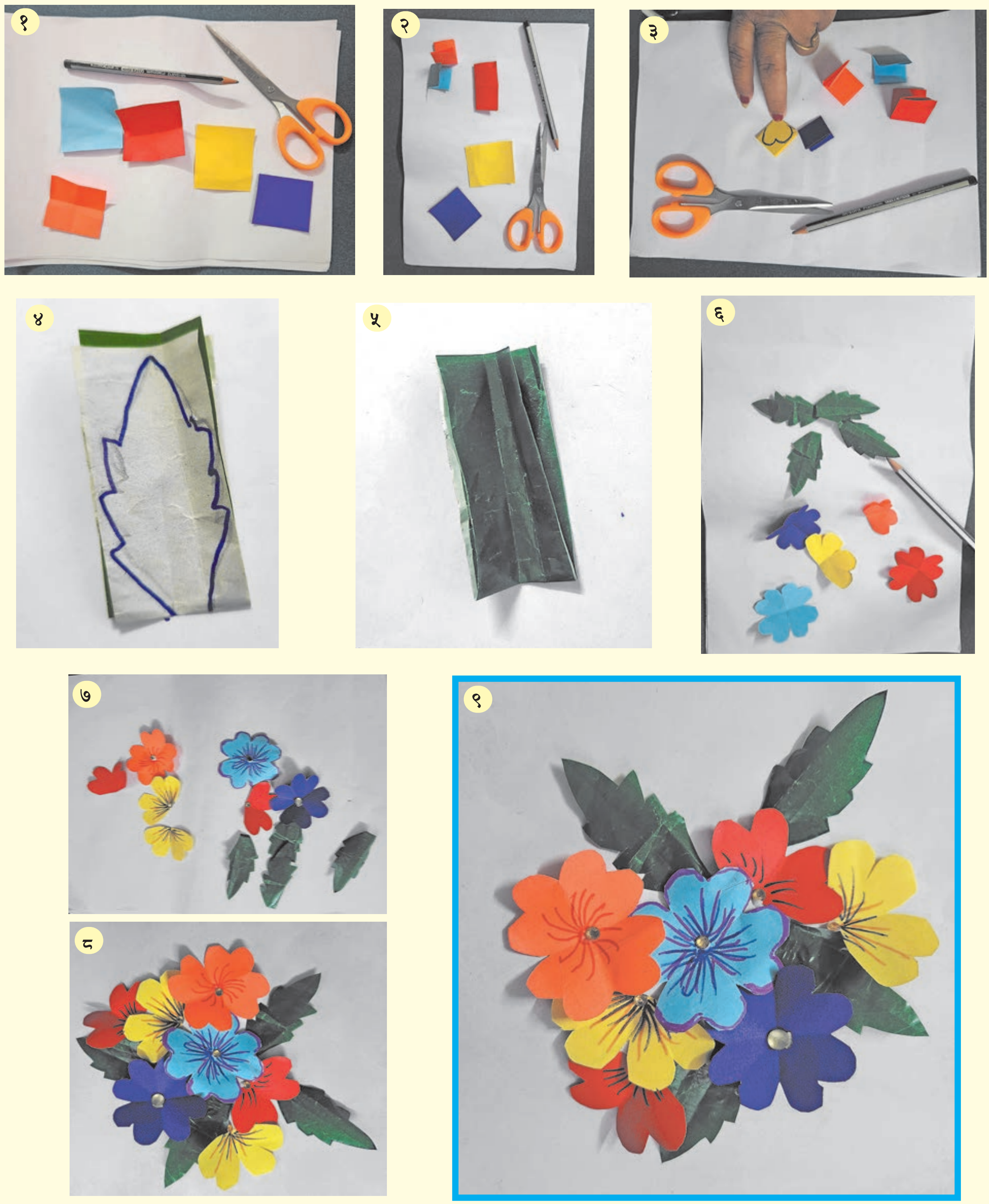

५ परिसर के कार्यों की पहचान

हमारा दैनिक जीवन सहज एवं सरल हो इसके लिए परिसर के विभिन्न व्यक्ति विभिन्न काम करते रहते हैं। उनके कार्यों के कारण हमारा दैनिक जीवन आसान हो जाता है। आओ, हम इन विभिन्न कार्यों की जानकारी प्राप्त करें।

मेरी कृति

बताओ तो जरा, मैं क्या कार्य करता हूँ?

- दिए गए चित्रों पर बातचीत करके विभिन्न कार्यों के उपयोग समझाएँ।

अ. उ. १
अ. क्ष. १.२
अ. नि. ५

नि:शुल्क वितरण के लिए

६ कार्य और सामग्री

प्रत्येक कार्य के लिए निश्चित साधन-सामग्री की आवश्यकता होती है। इन साधनों के कारण हमारे कार्य आसान और सुव्यवस्थित होते हैं। साधन-सामग्रियों के उपयोग से समय और श्रम की बचत होती है। अत: विविध कार्यों के लिए विभिन्न साधनों की पहचान होना आवश्यक है।

मेरी कृति

१. नीचे बैंक कैशियर, प्लंबर, वड़ा पाव विक्रेता, इलेक्ट्रीशियन, संगणक अभियंता और चित्रकार के चित्र दिए गए हैं। उनके कार्यों के लिए आवश्यक साधनों के नाम उनके चित्रों के सामने लिखो।

____
____
____
____

____
____
____
____

____
____
____
____

____
____
____
____

____
____
____
____

____
____
____
____

- विभिन्न कार्यों के लिए विशेष साधन-सामग्रियों की आवश्यकता होती है। कार्य करने के लिए उन साधन-सामग्रियों के उपयोग करने के तरीके समझाएँ।

२. नीचे दिए गए कार्यों के लिए लगने वाली साधन-सामग्रियों की सूची बनाओ।

सिलाई काम : ....

....

कृषि या खेती काम : ....

....

साफ-सफाई का काम : ....

....

३. परिसर के किसी व्यवसायी का साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्नावली तैयार करो।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

- परिसर के व्यवसायियों का साक्षात्कार लेने के लिए प्रश्नावली तैयार कराएँ।
- व्यवसायी का साक्षात्कार लेने का अवसर उपलब्ध कराएँ। (यह उपक्रम अनिवार्य है।)
- नमूना के मुद्दे : १. व्यावसायिक का नाम, २. उनका काम, ३. काम का स्वरूप और समय, ४) आमदनी या आय।

अ. उ. १

अ. क्ष. १.२

अ. नि. ६

४. तुम्हारे आस-पास रहने वाले कुछ व्यवसायियों एवं उनके उपयोग के साधनों के चित्र नीचे दिए गए हैं। वे इन साधनों का उपयोग किस तरह करते हैं, बताने के लिए तालिका पूर्ण करो।

कार्य	साधन	साधनों का उपयोग
	स्टेथोस्कोप 	
	सिलाई मशीन, नापने वाली टेप 	
	सुई/फूल/धागा 	
	वजनकाँटा 	

	सीकों की झाड़ू	
	खड़िया, डस्टर	
	ट्रैक्टर	
	पाना और स्क्रू ड्राईवर	

अ. उ. १
अ. क्ष. १.२
अ. नि. ६

● उपरोक्त व्यक्तियों के कार्यों के लिए लगने वाले विभिन्न साधन-सामग्रियों के उपयोग और महत्त्व समझाएँ।

वाहन दुरुस्ती के लिए लगने वाली साधन-सामग्री :

हम यातायात के लिए विभिन्न वाहनों का उपयोग करते हैं। उदाहरण- बस,कार,साइकिल, मोटर साइकिल, रिक्शा इत्यादि। वाहनों में बिगाड़ होने पर वाहनों की दुरुस्ती एवं देखभाल करने वाला मैकेनिक उन वाहनों की दुरुस्ती के लिए निम्न साधन-सामग्रियों का उपयोग करता है।

१. पाना : नट बोल्ट मजबूती से कसने और ढीला करने के लिए।

२. स्क्रू ड्राइवर : स्क्रू मजबूती से कसने और ढीला करने के लिए।

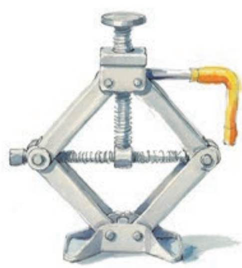

३. जैक : वाहन ऊपर उठाने के लिए।

४. हवा भरने का पंप : पहिये में हवा भरने के लिए।

५. पक्कड़ : वस्तु को कसकर पकड़ने के लिए।

६. नट-बोल्ट : दो भागों को जोड़ने के लिए ।

७. टायर ट्यूब : वाहनों को आसानी से दौड़ाने के लिए।

८. कपड़ा : वाहनों को पोछने और स्वच्छ करने के लिए।

५. परिसर के किसी गैरेज पर प्रत्यक्ष जाकर वहाँ इन साधनों का उपयोग कैसे किया जाता है, निरीक्षण करो।

अ. उ. १
अ. क्ष. १.२
अ. नि. ६

- परिसर के किसी गैरेज के क्षेत्र भ्रमण का आयोजन करो। (यह उपक्रम लेना अनिवार्य है।)

७ हस्त कौशल – २

कुछ उत्सवों पर हम अपने घर की सजावट करते हैं। सजावट के लिए फूलों, कागजों और आकाश कंदील का उपयोग करते हैं । आकाश कंदील बेचकर कमाई भी हो सकती है।

मेरी कृति

आकाश कंदील

साधन और सामग्री: दो रंगों का मार्बल पेपर, कार्ड पेपर, पट्‌टी, पेन्सिल, गोंद, सुनहरा कागज, टेप, धागा आदि।

दिए गए क्रम से कृति करके आकाश कंदील तैयार करो।

- दी गई कृति के अनुसार आकाश कंदील तैयार कराएँ।

८ मेरी गृहवाटिका

अपने घर या पाठशाला के परिसर की इमारत के आस-पास खाली जगह में गृहवाटिका तैयार की जाती है। गृहवाटिका से हमें फल, फूल और औषधीय वनस्पतियाँ मिलती हैं।

मेरी कृति

१. गृहवाटिका का क्षेत्र भ्रमण करो और नीचे दिए गए मुद्दों के आधार पर निरीक्षण करके चर्चा करो।

*** गृहवाटिका कैसी हो :**

- गृहवाटिका के लिए भूमि, पौधे लगाने योग्य हो। वहाँ भरपूर सूर्य प्रकाश उपलब्ध हो।
- उपलब्ध जगह के अनुसार पौधे रोपना।
- पानी की सुविधा हो।
- जानवरों से सुरक्षा के लिए गृहवाटिका के चारों ओर बाड़ हो।

*** गृहवाटिका के लिए आवश्यक साधन-सामग्री :**

छोटी बाल्टी, गमले, खुरपी, झारी, मिट्टी, खाद, बीज/पौधे आदि।

*** गृहवाटिका तैयार करने की प्रक्रिया :**

- **मिट्टी तैयार करना :** मिट्टी से पत्थर कंकड़ निकालकर मिट्टी भुरभुरी बनाओ।
- **खाद डालना :** क्यारी तैयार करते समय मिट्टी में खाद मिलाओ।

खाद के प्रकार – १. कंपोस्ट खाद २. गोबर खाद ३. केंचुआ खाद ४. खरपतवार की खाद।

- **बीज बोना :** योग्य अंतर पर बीज बोओ या पौधों को रोपो।
  आवश्यकता होने पर बीजों पर मिट्टी की पतली परत फैलाओ।
- **पानी देना :** आवश्यकता के अनुसार झारी से धीरे-धीरे पानी डालो। अधिक पानी इकट्ठा ना हो।
- **देखभाल :** बोए/रोपे गए बीजों-पौधों पर नियमित ध्यान रखो। खरपतवार निकाल दो।

- किसी गृहवाटिका जाकर उसकी जानकारी दें। (यह उपक्रम अनिवार्य है।)
- गृहवाटिका में कौन-कौन-से पौधे, भाजी, लता, बेल लगते हैं, इनकी सूची बनवाएँ।

अ. उ. ३
अ. क्ष. ३.२
अ. नि. १९

२. तुमने जो गृहवाटिका देखी है, उसमें कौन–कौन–से पौधे लगाए गए हैं? उनकी सूची तैयार करें।

१. .... २. .... ३. ....

४. .... ५. .... ६. ....

३. घर या पाठशाला परिसर के गमलों में मेथी, धनिया, टमाटर, मिर्च जैसी जल्दी उगने वाली सब्जियाँ उगाएँ।

४. फलों की चाट

गृहवाटिका में विभिन्न फलों के पेड़ भी लगाए जाते हैं। इन पेड़ों से मिलने वाले फलों से स्वादिष्ट और पौष्टिक रायता तैयार किया जा सकता है।

नीचे दी गई सामग्री और साधनों का उपयोग करके चित्र में दिए गए क्रम के अनुसार और शिक्षकों के निर्देशानुसार कृति करो।

साधन और सामग्री– चीकू, केला, तरबूज, संतरा, मोसंबी, अंगूर, सेब, नाशपाती, उपलब्धता के अनुसार अन्य फल, चाट मसाला, कटोरा, चाकू, छीलने वाला यंत्र (पीलर), चम्मच और छोटी कटोरियाँ आदि।

फलों को स्वच्छ धो लो।

आवश्यक फलों के छिलके उतार लो।

फलों के छोटे–छोटे टुकड़े करो।

सभी टुकड़ों को एक बड़े कटोरे में इकठ्ठा करो।

टुकड़ों पर चाट मसाला डालो।

चाट मसाला डालकर सभी टुकड़ों को अच्छी तरह मिलाओ।

तैयार हुए पौष्टिक और स्वादिष्ट चाट (फ्रूट चाट) को छोटी कटोरी में निकालकर दूसरों को दो और खुद भी खाओ।

- गृहवाटिका कैसे तैयार करनी है, यह समझाकर बताएँ।
- गृहवाटिका तैयार करवाएँ। फलों की चाट बनाने के लिए बगीचे के फलों का उपयोग करें या विद्यार्थियों को उपलब्धतानुसार घर से फल लाने के लिए कहें।
- विद्यार्थियों की सहभागिता से फलों की चाट बनवाएँ।

गृहवाटिका की देखभाल और सजावट

गृहवाटिका के पौधों की सुरक्षा करने के लिए बाड़ होनी आवश्यक है। आकर्षक बाड़ होने से गृहवाटिका अधिक सुशोभित हो सकती है। गृहवाटिका की बाड़ तैयार करने के लिए प्लास्टिक की खाली बोतलों का भी उपयोग किया जा सकता है। इससे परिसर की प्लास्टिक की बेकार बोतलों का पुनः उपयोग किया जा सकता है।

मेरी कृति

१. नीचे दी गई साधन और सामग्री का उपयोग करके दिए गए क्रम में कृति करो।

साधन और सामग्री : प्लास्टिक की बेकार बोतलें, मिट्‌टी, वाटर कलर, खुरपी, पानी आदि।

१. सबसे पहले प्लास्टिक की बोतलों को साफ करके उन्हें अलग-अलग रंगों से रँगों।

२. बोतलों का रंग सूख जाने पर पूरी बोतल को मिट्‌टी से भरकर ढक्कन लगा दो।

३. पाठशाला परिसर में या बगीचे के किनारे पर जहाँ आवश्यक हो, खुरपी की मदद से मिट्‌टी खोद लो।

४. उनमें रंगीन बोतलें (बोतल का मुँह नीचे की ओर रखकर) खड़ी करके रखो। खोदी हुई मिट्‌टी को बोतल के चारों ओर दबाकर बोतल को मजबूती से खड़ा करो।

५. बोतल के निचले हिस्से की मिट्‌टी को मजबूती से जमाए रखने के लिए ऊपर से थोड़ा पानी छिड़को और हाथों से मिट्‌टी को कसकर दबाओ।

२. खाली डिब्बे या कप पर, सुतली या आइसक्रीम की डंडियाँ चिपकाकर पेन स्टैंड तैयार करो।

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २१.२

- अनुपयोगी वस्तुओं से बनाई गई वस्तुओं की प्रदर्शनी आयोजित करें।

९ हमारी फसलें

शिक्षिका : बताओ तो, आज तुम अपने टिफिन (डिब्बे) में क्या-क्या लाए हो?

समीर: मैं आज बाजरे की रोटी और मेथी की सब्जी लाया हूँ।

सई: मैं तो आज दाल-चावल और आलू की सब्जी लाई हूँ।

शिक्षिका : वाह बहुत अच्छे! लेकिन समीर, क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारे डिब्बे का यह 'बाजरा' और 'मेथी' वास्तव में कहाँ से आती है?

समीर: (सोचते हुए) माँ तो दुकान से लाती है, लेकिन पिता जी कहते हैं कि यह खेत में तैयार होती है।

शिक्षिका: बिल्कुल सही! हमारे परिसर के किसान भाई कड़ी मेहनत करके फसलें उगाते हैं। रोहन, तुम्हारे घर के पीछे जो खेत है, वहाँ अभी कौन-सी फसल लगी है?

रोहन: बहन जी, वहाँ अभी 'ज्वार' कटाई के लिए तैयार है और बगल की क्यारी में थोड़ा 'चना' भी लगाया गया है।

शिक्षिका: बहुत अच्छे! ज्वार, बाजरा, चावल, चना, अरहर (तुअर), कपास, गन्ना जैसी कई हमारी स्थानीय फसलें हैं।

सई: बहन जी, फिर हमें सब्जियाँ और फल कहाँ से मिलते हैं?

समीर: और बहन जी, फूल भी?

शिक्षिका: जैसे अनाज, गन्ना, कपास की खेती की जाती है, वैसे ही सब्जियों, फलों और फूलों के बड़े बगीचे होते हैं, वहीं से हमें ये वस्तुएँ मिलती हैं।

चलो, किस जगह की कौन-सी फसल प्रसिद्ध है, इसे हम गीत के माध्यम से समझते हैं। गीत में अपनी स्थानीय फसलों का उल्लेख जरूर करो।

मेरी कृति

१. शिक्षकों की उपस्थिति में स्वयं खेत पर जाकर किसान का साक्षात्कार लो।

२. समूह गीत

गाड़ी आई गाड़ी आई
गाड़ी रुकी गाड़ी रुकी
गाड़ी आई **सांगली** से
हल्दी उतार लो रे।
गाड़ी आई **जलगाँव** से
केले उतार लो रे।
गाड़ी आई **भिवापुर** से
मिर्च उतार लो रे।
गाड़ी आई **जालना** से
ज्वार उतार लो रे।
गाड़ी आई **नाशिक** से
अंगूर उतार लो रे।
गाड़ी आई **रत्नागिरि** से
हापुस आम उतार लो रे।
गाड़ी आई **घोलवड़** से
चीकू उतार लो रे।
गाड़ी आई **सातारा** से
लहसुन उतार लो रे।
गाड़ी आई **सोलापुर** से
अरहर उतार लो रे।
गाड़ी आई **लातूर** से
चने उतार लो रे।

चलो-चलो रे।
चढ़ो-चढ़ो रे।।
हल्दी लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
केले लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
मिर्च लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
ज्वार लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
अंगूर लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
हापुस आम लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
चीकू लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
लहसून लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
अरहर (तुअर) लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।
चने लाई भर-भर के
चलो-चलो रे।।

- ऊपर दिए गए गीत को लय और ताल के साथ गवाएँ।
- स्थानीय क्षेत्र की फसलों का उल्लेख करते हुए गाना समूह में गवाएँ।
- अन्न-अनाज का महत्व और किसानों के कड़े परिश्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ।

अ. उ. ३
अ. क्ष. ३.२
अ. नि. १८

निःशुल्क वितरण के लिए

३. नीचे दी गई तालिका पूर्ण करो।

अनाज	दलहन	फल	पत्तेदार सब्जियाँ	फल वाली सब्जियाँ	फूल
१.					
२.					
३.					
४.					
५.					

४. फसलों के चित्र देखो और उनके नाम लिखो।

....

....

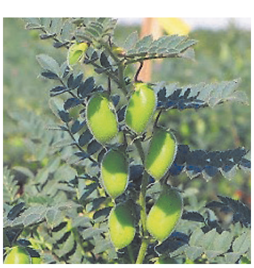

....

५. विभिन्न प्रकार के अनाज/बीजों के नमूने छोटी पारदर्शी थैलियों में इकट्ठा करो। कार्डशीट पर एक पेड़ का चित्र बनाओ और उसपर इन नमूनों को चिपकाओ।

६. क्षेत्र भ्रमण

शिक्षकों के मार्गदर्शन में अपने क्षेत्र के किसी खेत या फलों के बाग का भ्रमण करो। नीचे दिए गए बिंदुओं के आधार पर जानकारी प्राप्त करो और लिखो :

१. किसान का नाम – (जिनके बाग/खेत का भ्रमण किया, उनका नाम)

___

२. स्थान / गाँव –

___

३. दिनांक और समय –

___

४. कौन–कौन–से पेड़/फसलें हैं?

___

५. बुवाई / रोपाई से लेकर उत्पादन मिलने तक साधारणतः कितना समय लगता है?

___

६. पेड़ों को पानी कहाँ से दिया जाता है? (कुआँ / नदी / तालाब)

___

७. पानी देने की पद्धति कौन–सी है? (टपक सिंचन / फुहारा सिंचन)

___

८. खेती के लिए कौन–सी खाद का उपयोग किया जाता है?
(गोबर की खाद/ केंचुआ खाद/ कंपोस्ट/हरी खाद)

___

९. पेड़ों को बीमारियों से बचाने के लिए क्या उपाय करते हैं?

___

१०. वहाँ कौन–सी मशीनें या औजार दिखाई दिए?

___

११. किसान से चर्चा करके उन्हें आई हुई समस्याओं और अनुभवों को लिखें।

___

- क्षेत्र भ्रमण का आयोजन कराएँ। (यह उपक्रम अनिवार्य है।)

१० परिसर स्वच्छ करें

हमारे आस-पास प्रत्येक व्यवसायी कोई-न-कोई काम कर रहा होता है। उदा. किसान खेती करते हैं, डॉक्टर मरीज की जाँच करते हैं, सफाई कर्मचारी परिसर की सफाई करते हैं आदि। ये सभी काम महत्त्वपूर्ण हैं। हमें इन सभी कामों के प्रति आदर रखना चाहिए।

मेरी कृति

१) अपने परिसर की स्वच्छता करो और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :

- स्वच्छता नहीं की तो क्या होगा ?

- स्वच्छता करने वाले व्यक्ति का सम्मान कैसे करोगे ?

- हमें मदद करने वाले लोगों की सूची तैयार करो।

---

२. अपने घर या पाठशाला में काम करने वाली मौसी (सहायिका) या काका (सहायक) के जन्मदिन पर कागज से फूल और पुराने समाचारपत्र से फूलदान तैयार करो और उन्हें भेंट दो।

- विद्यार्थियों से परिसर की स्वच्छता करवाएँ।
- श्रम प्रतिष्ठा की कहानियाँ सुनाएँ।
- विभिन्न विशेष दिवस मनाते समय सहायकों को बुलाकर उनका सत्कार करें।

अ. उ. ३
अ. क्ष. ३.१
अ. नि. १७

११ हस्त कौशल – ३

हम अपने घर में उपलब्ध वस्तुओं से आकर्षक चीजें बना सकते हैं। इन वस्तुओं का उपयोग दूसरों को उपहार देने के लिए किया जा सकता है।

मेरी कृति

१. फूलदान

नीचे दी गई सामग्री और साधनों का उपयोग करके दिए गए चित्रों के कृतिक्रम (steps) के अनुसार फूलदान तैयार करो।

साधन और सामग्री : पुराने समाचारपत्र, थाली, प्लास्टिक की बोतल, फेविकोल, गोंद, जलरंग, ब्रश, पानी इत्यादि।

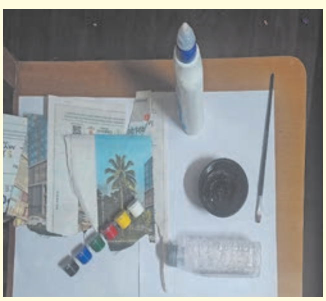

१) एक प्लास्टिक की बोतल लो। समाचारपत्र के छोटे-छोटे टुकड़े कर लो।

२) बर्तन में पानी लेकर उसमें गोंद या फेविकोल डालकर मिला लो।

३) कागज का एक-एक टुकड़ा पानी में भिगोकर बोतल पर चिपकाओ।

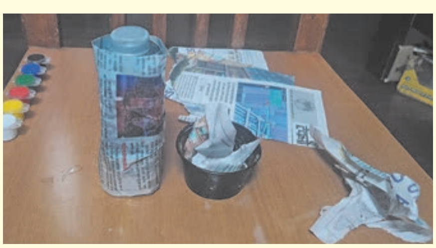

४) बोतल पूरी तरह ढँक जाए, इस तरह कागज चिपका लो।

५.बोतल सूखने दो।

६) सूखी हुई बोतल के आकार को मनपसंद रंग दो।

७) रंग सूखने पर टिकली, मोती, काँच चिपकाएँ और सुंदर-सा फूलदान तैयार करो।

- तैयार की गई वस्तुओं की प्रदर्शनी लगवाएँ। उनकी बिक्री करवाएँ।

२. पुष्पगुच्छ

नीचे दी गई सामग्री और साधनों का उपयोग करके दिए गए चित्रों के कृतिक्रम के अनुसार पुष्पगुच्छ तैयार करो।

साधन और सामग्री: पतला कार्ड पेपर (पत्तियों के लिए हरा और फूलों के लिए रंग-बिरंगा), गोंद, स्केचपेन, मोती, कुंदन, टिकली आदि।

१२ सामाजिक व्यवहार

हम साथ मिलकर कई समारोह मनाते हैं। इससे एक-दूसरे से मेलजोल होता है और नई पहचान बनती है। प्रसन्नता का वातावरण होता है। नई जानकारी मिलती है और नई चीजें सीखने को मिलती हैं। सहयोग की भावना बढ़ती है और लोगों में एकता आती है।

समारोह मनाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखो।

१. एक-दूसरे का सम्मान करो।
२. स्वच्छता बनाए रखो।
३. स्पीकर की आवाज धीमी रखो।
४. बुजुर्गों और छोटे बच्चों का ख्याल रखो।
५. अनुशासन का पालन करो।
६. ध्यान रखो कि कार्यक्रम से यातायात अवरोध (ट्रैफिक जाम) न हो।
७. भोजन, पानी और बिजली का सीमित उपयोग करो।

मेरी कृति

१. पाठशाला में पालन किए जाने वाले अनुशासन के नियमों की सूची तैयार करो।

- पाठशाला में पालन किए जाने वाले अनुशासन के नियमों की सूची तैयार कराएँ।
- कार्यक्रम को खुशी से मनाते समय दूसरों को परेशानी न हो, इसका ध्यान रखना हमारी जिम्मेदारी है, यह बात अच्छी तरह समझाएँ।

अ. उ. २
अ. क्ष. २.१
अ. नि. ८

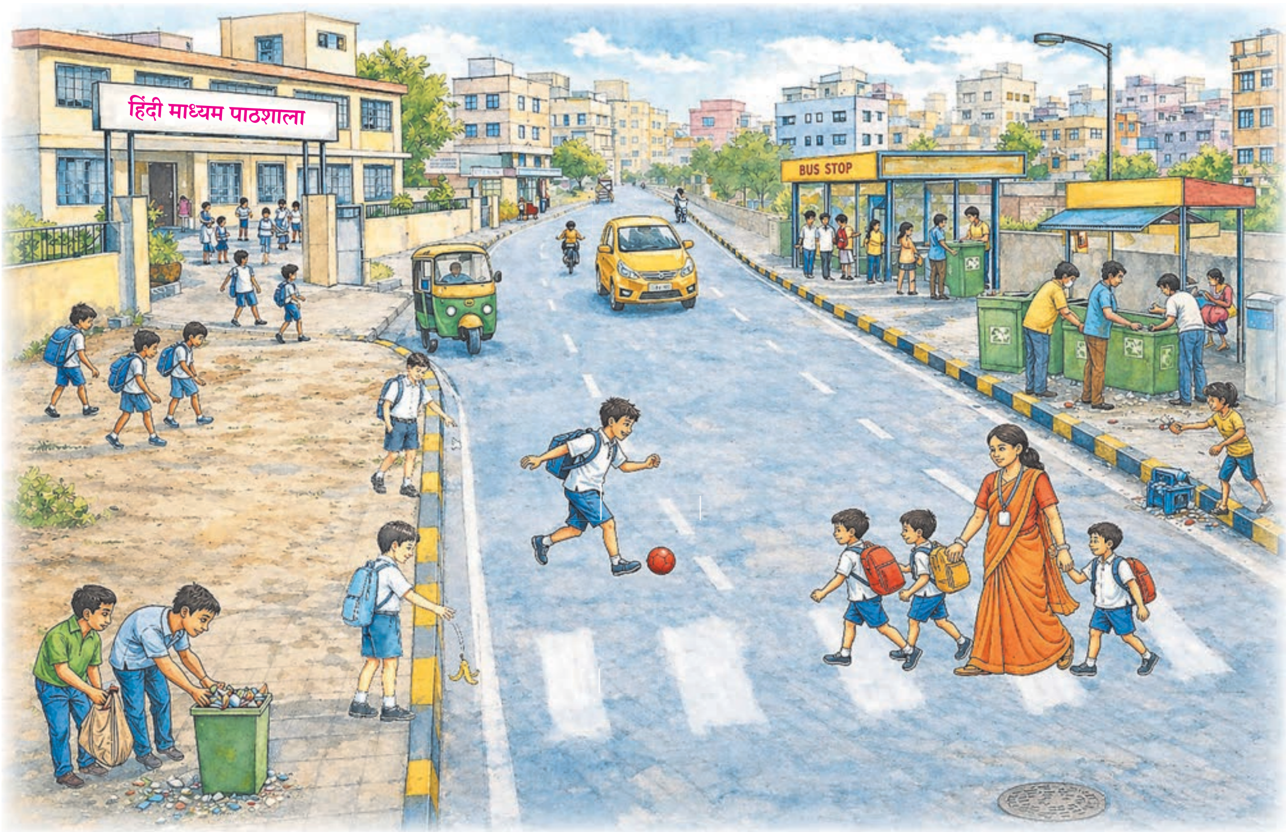

२.चित्र का निरीक्षण करो और उसमें दी गई उचित और अनुचित कृतियों की सूची बनाओ।

उचित कृतियाँ : ____________________

____

____

____

अनुचित कृतियाँ : ____________________

____

____

____

- सूची की जाँच करके सकारात्मक व्यवहार के लिए मार्गदर्शन करें।

१३ सार्वजनिक कार्यों में सहभाग

हम कई सार्वजनिक सुख-सुविधाओं का उपयोग करते हैं। जैसे- सार्वजनिक उद्‌यान, सड़कें, रेलवे स्टेशन, बस स्थानक, पाठशाला, अस्पताल, शौचालय इत्यादि। इन सुविधाओं का सही ढंग से उपयोग करना और उनकी स्वच्छता बनाए रखना हमारा कर्तव्य है।

दृश्य १ : सार्वजनिक उद्‌यान (पार्क) -

(स्वरा और आर्यन घर के पासवाले उद्‌यान में जाते हैं। आर्यन खाने का खाली पैकेट जमीन पर फेंक देता है।)

स्वरा : आर्यन, यह पैकेट उठाकर कूड़ेदान में डालो।

आर्यन : अरे! यह उद्‌यान तो सार्वजनिक है। यहाँ अगर किसी ने कचरा डाल भी दिया तो क्या फर्क पड़ता है?

स्वरा : सार्वजनिक उद्‌यान का मतलब है हम सभी का उद्‌यान। यहाँ कचरा न करना और स्वच्छता बनाए रखना हमारा कर्तव्य है।

आर्यन : हाँ स्वरा, तुम बिल्कुल सही कह रही हो। अब से मैं सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता बनाए रखकर अपना योगदान दूँगा।

दृश्य २ : बस की यात्रा

(मीना बस की सीट पर पेन से कुछ लिख रही है।)

राजू : मीना, रुको! बस की सीट पर लिखना या उसे कुरेदना गलत है।

मीना : यह बस हमारी अपनी थोड़ी ही है।

राजू : यह बस हम सभी की है।

कंडक्टर (वाहक) : बिल्कुल सही! सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना ही सार्वजनिक कार्यों में हमारा बड़ा योगदान है।

- **क्षेत्र भ्रमण :** विद्‌यार्थियों को बस स्थानक या रेलवे स्टेशन पर ले जाकर सफाई कर्मचारियों से बातचीत करने का अवसर प्रदान करें।
- उपरोक्त संवादों का कक्षा में अभिनय करवाएँ।

अ. उ. १
अ. क्ष. १.२
अ. नि. ७

नि:शुल्क वितरण के लिए

१. दी गई गतिविधियों में से तुम जो गतिविधियाँ करते हो, उनके सामने ✓ ऐसा निशान लगाओ।

१. कचरा कूड़ेदान में डालना। ☐

२. सार्वजनिक स्थानों पर शांति बनाए रखना। ☐

३. यातायात के नियमों का पालन करना। ☐

४. बस / रेलवे टिकट के लिए कतार में खड़े रहना। ☐

५. रुग्णवाहिनी (एम्बुलेंस) की आवाज सुनने पर रास्ता खाली करना। ☐

६. पैदल चलते समय फुटपाथ का उपयोग करना। ☐

७. सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल करना। ☐

८. स्कूल की वस्तुओं की सावधानी बरतना। ☐

९. पुस्तकालय की किताबों को सावधानी से इस्तेमाल करना। ☐

१०. सार्वजनिक शौचालय का उपयोग करने के बाद स्वच्छता बनाए रखना। ☐

- उपरोक्त गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी किस प्रकार सार्वजनिक कार्यों में शामिल हो सकते हैं, इस पर चर्चा करें और सकारात्मक व्यवहार के बारे में समझाएँ ।
- पर्यटन स्थलों पर हमारी सांस्कृतिक विरासत (Heritage) की रक्षा करने के बारे में चर्चा करें।

अ. उ. १
अ. क्ष. १.२
अ. नि. ७

२. दिए गए चित्र का निरीक्षण करो और उसमें दिए गए प्रसंग का अपने शब्दों में वर्णन लिखो।

अ. उ. २

अ. क्ष. २.१

अ. नि. ९

• समाज / पाठशाला में रहते समय सकारात्मक व्यवहार के मुद्दों को अंकित करें।

१४ सामाजिक व्यवहार के सकारात्मक नियम

समाज में रहते समय सभी का जीवन आसान और सुखद बनाने के लिए पालन किए जाने वाले नियमों को सामाजिक व्यवहार के नियम कहते हैं।

- **नियमों का पालन करने से समाज में व्यवस्था बनी रहती है और सभी का जीवन सरल हो जाता है।**

नियमों का महत्व :

- समाज में शांति बनी रहती है।
- सभी को प्रगति के समान अवसर मिलते हैं।
- किसी पर अन्याय नहीं होता।
- देश के एक जागरूक नागरिक के रूप में हमारा विकास होता है।

चलो, सामाजिक व्यवहार के कुछ महत्वपूर्ण सकारात्मक नियमों को समझते हैं :

१) **सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल करना :** पाठशाला, बगीचे, सड़कें, बस आदि हम सबके हैं। उनकी और उनमें स्थित वस्तुओं की देखभाल करना, स्वच्छता रखना, बिजली बचाना आदि हमारा कर्तव्य है।

२) **अनुशासन और कतार का पालन करना :** कतार का पालन करने से अव्यवस्था नहीं होती।

३) **पर्यावरण की रक्षा करना :** पौधे लगाना और उन्हें बड़ा करना, पेड़ों की देखभाल करना, पानी बचाना और ऐसा व्यवहार करना जिससे प्रदूषण कम हो, ये हमारी जिम्मेदारी है।

४) **सहायता करना :** जरूरतमंद व्यक्तियों की सहायता करना हमारा कर्तव्य है।

५) **आदर और अपनेपन से व्यवहार करना :** छोटे, बड़े, अन्य भाषा बोलने वाले, सभी धर्मों के लोग और दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति हमें प्रेम, सम्मान और अपनापन दिखाना चाहिए।

६) **नियमों का पालन :** हर जगह के विविध नियमों का पालन करना आवश्यक है।

७) **स्वच्छता :** समाज में रहते हुए साफ-सफाई रखना आवश्यक है।

मेरी कृति

१. जानकारी दो :

१) आज मैंने किया अच्छा व्यवहार

२) तुमने किसे, क्या और कब मदद की ?

२. सकारात्मक और नकारात्मक व्यवहार की सूची बनओ।

३. सामाजिक नियमों के घोषवाक्य कार्ड पेपर पर लिखकर कक्षा में लगाओ।

अ. उ. २

अ. क्ष. २.१

अ. नि. ९

- सकारात्मक और नकारात्मक सामाजिक व्यवहार की जानकारी दें।
- सकारात्मक सामाजिक नियमों के बारे में पूछें और चर्चा कराएँ।

१५ सामाजिक सुरक्षा

समाज का अर्थ है सद्भाव के साथ रहने वाले अनेक व्यक्तियों या परिवारों का समूह। इस समाज को सड़कों, पानी, वाहनों, अस्पताल, पाठशाला जैसी कई चीजों की जरूरत होती है। इन चीजों की सुरक्षा और स्वच्छता बनाए रखना समाज के प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी है। इसलिए हम सभी को सामाजिक सुरक्षा के नियमों का पालन कर एक अच्छा नागरिक बनने का प्रयास करना चाहिए।

मेरी कृति

१. चित्रों का निरीक्षण करो ऐसी स्थितियों में तुम क्या करोगे, अपने शब्दों में लिखो।

२. सही या गलत की पहचान करो और लिखो।

१) बस की सीट फाड़ना – ____________

२) बगीचे में बह रहे नल का पानी बंद करना– ____________

३) सड़क पर पड़ा कचरा उठाकर कूड़ेदान में डालना– ____________

४) स्कूल की दीवारों या बोर्ड पर क्रेयॉन से लकीरें खींचना– ____________

५) खेल के कालांश में जाते समय कक्षा के पंखे और लाइट बंद करना– ____________

६) ट्रेन में बिना टिकट यात्रा करना– ____________

- सामाजिक सुरक्षा के नियमों पर चर्चा और बातचीत करें। नियमों का पालन करने के लिए कहें। हर सप्ताह दो 'सुरक्षादूत' नियुक्त करें और उनके द्‍वारा किए गए कार्यों का रिकॉर्ड रखें।
- सुरक्षादूत के रूप में किए गए कार्यों के अनुभव को सप्ताह के अंत में कक्षा में बताने के लिए कहें।

अ. उ. २
अ. क्ष. २.१
अ. नि. १०

१६ हस्त कौशल – ४

हस्त कौशल का अर्थ है हाथों से उत्कृष्ट तरीके से विभिन्न कार्य करना। उदा. चित्र बनाकर रंग भरना, मिट्टी कार्य (मिट्टी के बर्तन/मूर्तियाँ बनाना), पाककला, कागज का काम, रँगाई, सिलाई, इत्यादि। इसी तरह हस्त शिल्प के माध्यम से सजावट के लिए विभिन्न वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं। आओ, हम इस कौशल का उपयोग करके एक फ्रेम बनाएँ।

मेरी कृति

१. कागज से मछली बनाना

नीचे दी गई साधन और सामग्री का उपयोग करके मछलियों का फ्रेम बनाओ।

साधन और सामग्री: रंगीन कागज, कैंची, गोंद, कार्ड पेपर, स्केच पेन इत्यादि।

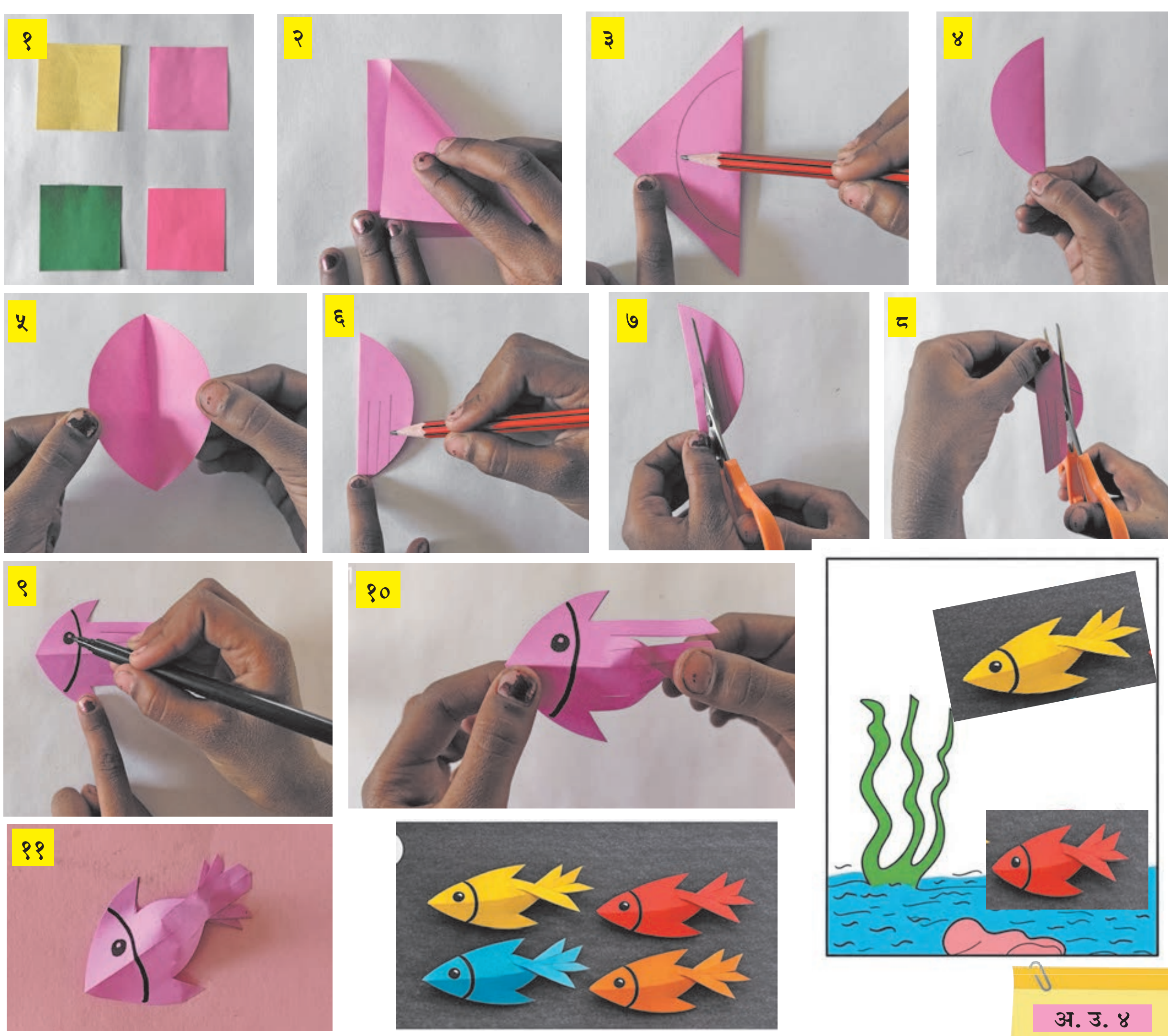

- विधि के अनुसार मछलियाँ तैयार कराएँ और सजावट करके एक फ्रेम बनवा लें।
- ऐसी मछलियों का उपयोग करके ग्रीटिंग कार्ड और मछलीघर (एक्वेरियम) तैयार करवाएँ।

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २१.६

पाककला का अर्थ है स्वादिष्ट, रुचिकर और पौष्टिक खाद्‌य पदार्थ बनाने की कला। भारत के हर प्रांत में विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाए जाते हैं।

पाककला केवल पेट भरने के लिए नहीं है, बल्कि यह एक संस्कृति है। पाककला एक अच्छा व्यवसाय भी है। आधुनिक समय में कुकिंग प्रतियोगिताओं की वजह से इस कौशल को निखारने और नये व्यंजन सीखने का मौका मिलता है।

२. मूँगफली के चूरे का लड्डू

नीचे दी गई सामग्री और साधनों का उपयोग करके दिए गए चित्रों के क्रमानुसार कृति करो।

साधन और सामग्री

सेंकी हुए मूँगफली, कटा हुआ गुड़, घी, इलायची, खरल, कटोरा, बड़ा चम्मच, थाली।

१. मूँगफली खरल में कूट लो।

२. मूँगफली का पाउडर और गुड़ मिला लो।

३. एकत्रित किए गए मिश्रण को बाँधकर लड्डू बनाओ।

- ऊपर दी गई विधि के अनुसार लड्डू तैयार करवा लें।
- तैयार लड्डू विद्यार्थियों को खाने के लिए दें और उन्हें इसमें मौजूद सामग्री के पोषण मूल्य के बारे में बताएँ।
- विद्यार्थियों को फ्रूट सलाद, रायता और शरबत जैसे बिना ईंधन के बनने वाले व्यंजन घर पर बनाने के लिए प्रोत्साहित करें।

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २१

१७ आपातकालीन स्थिति

आपातकालीन स्थिति का अर्थ है अचानक, अप्रत्याशित रूप से होने वाली स्थिति या घटना। यह स्थिति या घटना खतरनाक होती है। इस स्थिति में तुरंत व्यवस्था करना आवश्यक होता है। ऐसी घटनाएँ प्राकृतिक या मानव निर्मित होती हैं। आओ, ऐसी कुछ आपातकालीन स्थितियों और उस समय किए जाने वाले सकारात्मक उपायों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

मेरी कृति

१. चित्र में दी गई आपातकालीन स्थिति पहचानकर उसके बारे में जानकारी लिखो और यह भी लिखो कि वह प्राकृतिक है या मानव निर्मित।

____

____

____

____

____

____

____

____

____

- आपातकालीन स्थिति का क्या अर्थ है, यह बताते हुए चर्चा और बातचीत के माध्यम से विभिन्न प्राकृतिक और मानव निर्मित आपातकालीन स्थितियों की जानकारी दें।
- ऐसी स्थिति में हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए और क्या सावधानी बरतनी चाहिए, इसकी जानकारी दें।

२. नीचे आपातकालीन स्थिति की कुछ घटनाएँ दी गई हैं। इन स्थितियों में तुम क्या करोगे, लिखो।

१) भूकंप आया :

२) आग लगी :

३) दुर्घटना होने पर :

४) दीवार गिर गई :

५) बाढ़ आई :

६) भीड़ में खोया :

आपातकालीन स्थिति में चोट लगने पर तुरंत उपचार करने के लिए कुछ सामग्री की आवश्यकता होती है। उस सामग्री को एक साथ रखने के लिए जो डब्बा होता है, उसे प्रथमोपचार पेटी कहते हैं।

३. मेरी प्रथमोपचार पेटी :

- प्रथमोपचार पेटी में आवश्यक सामग्री की सूची बनाओ। अभिभावकों/माता-पिता की मदद से प्रथमोपचार पेटी तैयार करो।

४. प्रथमोपचार पेटी का चित्र बनाओ।

५. आपातकालीन स्थिति में हमारी मदद करने वाले व्यक्तियों के नाम और उनके फोन नंबर लिखो।

- प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदा की स्थिति में हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए, इसका नाट्य-अभिनय करवाएँ।
- प्रथमोपचार पेटी की सामग्री की सूची जाँचें और उनके उपयोग पर चर्चा करें।
- आपातकालीन स्थिति में मदद करने वाले व्यक्तियों का साक्षात्कार लेने का अवसर उपलब्ध कराएँ।
- आपातकालीन स्थिति के कारण यदि मानसिक तनाव का सामना करना पड़े तो 'मनोदर्पण' और 'टेली-मानस' जैसी हेल्पलाइन उपलब्ध हैं, इनकी जानकारी दें ।

अ. उ. २

अ. क्ष. २.१

अ. नि. ११, १२

१८ परिसर और व्यवसाय

हमें लगने वाली सभी वस्तुएँ हम खुद तैयार नहीं कर सकते इसलिए वे वस्तुएँ हमें खरीदनी पड़ती हैं। उन वस्तुओं को तैयार करने वाले व्यवसाय होते हैं। इसका अर्थ यह है कि विभिन्न व्यवसायों के कारण हमारी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं और आवश्यक वस्तुएँ आसानी से मिल सकती हैं ।

मेरी कृति

१. परिसर में हमारी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई व्यवसाय चलते हैं। ऐसे व्यवसायों के नाम लिखो ।

१. .... ६. ....

२. .... ७. ....

३. .... ८. ....

४. .... ९. ....

५. .... १०. ....

२. हमारी दैनिक आवश्यकताओं की ऐसी दस वस्तुओं के नाम लिखो जो व्यवसायों से मिलती हैं।

१. .... ६. ....

२. .... ७. ....

३. .... ८. ....

४. .... ९. ....

५. .... १०. ....

- विभिन्न व्यवसायों की समाज के लिए उपयोगिता को समझाकर बताएँ।
- परिसर के व्यवसायों की एक सूची तैयार कराएँ और उसे कक्षा में लगाएँ।

अ. उ. ३
अ. क्ष. ३.१
अ. नि. १३, १६

३. पाठशाला में आमंत्रित किए गए व्यवसायी से प्रश्न पूछो और चर्चा करो। उसके व्यवसाय के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो। वह जानकारी अपने शब्दों में लिखो।

४. बागवानी के लिए लगने वाले साधनों के चित्र बनाओ और उनकी प्रतिकृति तैयार करो।

- व्यवसाय करने वाले कुछ अभिभावकों/माता-पिता को पाठशाला में आमंत्रित करके विद्यार्थियों को उनसे बातचीत करने का अवसर उपलब्ध कराएँ।

अ. उ. ३
अ. क्ष. १
अ. नि. १३, १६

परिसर के व्यवसायों का वर्गीकरण

नि:शुल्क वितरण के लिए

हमें अपने आस-पास कई प्रकार के व्यवसाय देखने को मिलते हैं। इनमें 'पारंपरिक व्यवसाय' का अर्थ है वे व्यवसाय जो हमारे पूर्वजों से चले आ रहे हैं और पारंपरिक तरीके से किए जाते हैं।

वहीं, आधुनिक मशीनों और उपकरणों का उपयोग करके जो व्यवसाय बड़े पैमाने पर, कम समय में और अधिक उत्पाद के लिए किया जाता है, उसे 'आधुनिक व्यवसाय' कहते हैं।

मेरी कृति

१. नीचे दिए गए व्यवसायों का पारंपरिक और आधुनिक में वर्गीकरण करो।

१. गोशाला में पशु पालना –
२. आधुनिक तकनीक का उपयोग करके ऊँची इमारतें बनाना –
३. बड़े पैमाने पर दूध इकट्ठा करना –
४. विभिन्न खाद्य पदार्थ घर पर बनाकर बेचना –
५. माँग के अनुसार मशीनों का उपयोग करके बड़ी मात्रा में खाद्य पदार्थ तैयार करना –
६. छोटे घर बनाना –

पारंपरिक व्यवसाय	आधुनिक व्यवसाय

२. अपनी जानकारी के पारंपरिक और आधुनिक व्यवसायों की सूची तैयार करो।

अ.क्र	पारंपरिक व्यवसाय	आधुनिक व्यवसाय

३. किसी आधुनिक व्यवसाय केंद्र पर जाओ। उसके बारे में जानकारी प्राप्त करो और लिखो।

४. पारंपरिक व्यवसाय और आधुनिक व्यवसाय के लाभ और हानि लिखो।

लाभ :

हानि :

५. आधुनिक और पारंपरिक व्यवसाय करने वालों के चित्र इकट्ठा करके चिपकाओ। चित्र के नीचे व्यवसायों का नाम लिखकर वह व्यवसाय आधुनिक है या पारंपरिक यह भी लिखो।

- पारंपरिक और आधुनिक व्यवसाय का क्या अर्थ है, समझाकर बताएँ।
- उनके बीच का अंतर स्पष्ट करें।
- पारंपरिक और आधुनिक व्यवसाय केंद्रों के क्षेत्र भ्रमण का आयोजन करें। (यह उपक्रम अनिवार्य है।)

अ. उ. ३
अ. क्ष. ३.१
अ. नि. १४

११ हस्त कौशल – ५

हमारे आस-पास कुछ व्यक्ति कागज से आकर्षक वस्तुएँ बनाने का व्यवसाय करते हैं। जैसे- आकाश कंदील, ग्रीटिंग कार्ड, कागज के फूल, इत्यादि।

हम अपने हस्त कौशल का उपयोग करके एक आकर्षक मोर तैयार कर सकते हैं।

मेरी कृति

१. नीचे दी गई साधन और सामग्री का उपयोग करके मोर बनाओ।

साधन और सामग्री: रंगीन कार्ड पेपर, कैंची, स्केच पेन, ग्लिटर पेन, गोंद, पेन्सिल, आईस्क्रीम स्टिक मनके आदि।

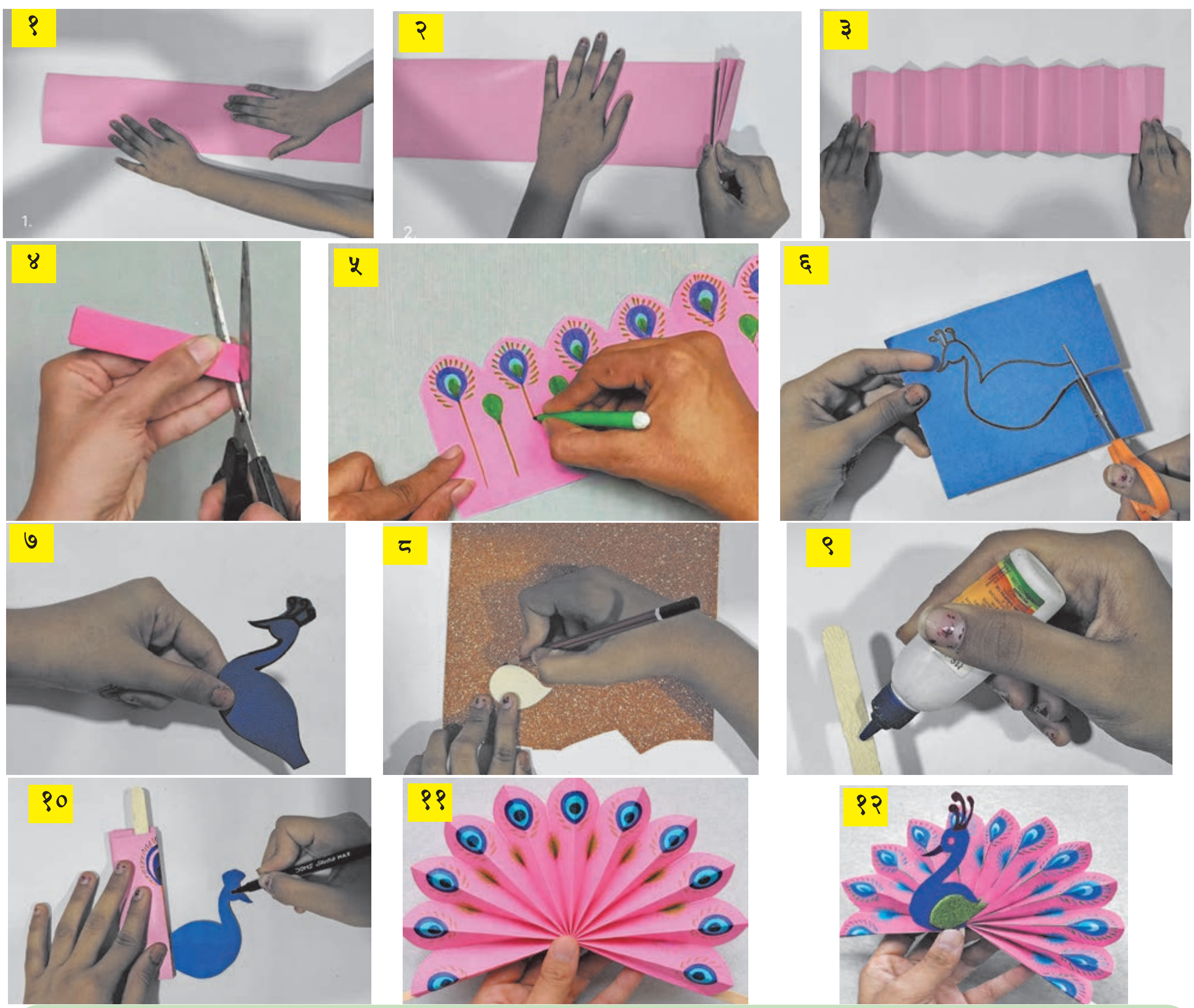

तीन मोर एक के नीचे एक जोड़कर दीवार पर लगाने के लिए सजावटी कलाकृति तैयार करो।

- ऊपर दी गई विधि के अनुसार मोर तैयार कराएँ।
- दीवार पर लगाने के लिए सजावटी वस्तु तैयार कराएँ।
- इसी तरह ओरिगामी पद्धति से विभिन्न पक्षी और प्राणी तैयार कराएँ।

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २१.६

२० परिसर के व्यवसायियों की जानकारी

हमारे परिसर में अनेक व्यक्ति अलग-अलग तरह के व्यवसाय करते हैं। कोई भी व्यवसाय करते समय हमें दूसरे व्यवसायियों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है।

नीचे दिए गए चित्र में एक बड़ी इमारत का निर्माण कार्य चल रहा है। इस इमारत को बनाने के लिए किन लोगों की मदद लगती है, बताओ।

अभियंता (इंजीनियर)

वास्तुशिल्पकार (आर्किटेक्ट)

बाँध काम श्रमिक

वकील

फर्श लगाने वाला

बड़ी मशीनें चलाने वाला (ऑपरेटर)

प्लम्बर

बढ़ई

मेरी कृति

१. ऊपर दिए गए चित्र में और किन लोगों के चित्रों की आवश्यकता है, इसकी सूची बनाओ।

- इमारत बनाते समय मदद करने वाले व्यक्तियों और उनके कामों के बारे में चर्चा करें।
- चित्र में दिखाए गए व्यक्तियों के अतिरिक्त मदद करने वाले अन्य व्यक्तियों के नाम और उनके काम पूछें।

२. कौन–सा कार्य कौन करता है– जोडियाँ मिलाओ।

कार्य का स्वरूप	उत्तर	किसका कार्य
१. फर्नीचर बनाना, दरवाजे–खिड़की बनाना		वास्तु शिल्पकार
२. इमारत का नक्शा बनाना		वकील
३. नल की पाइप जोड़ना		इंजीनियर/अभियंता
४. निर्माण कार्य के लिए आवश्यक दस्तावेजों की जाँच और सत्यापन करना।		लकड़ी का काम करने वाला
५. निर्माण कार्य नक्शे के अनुसार ठीक से हो रहा है, सही सामग्री सही मात्रा में उपयोग की जा रही है, देखना।		प्लम्बर

३. तुम्हें पता हो, ऐसे अन्य व्यवसायों के नाम लिखो।

४. अपने पसंदीदा व्यवसाय की जानकारी लिखो।

- चित्रों की मदद से विभिन्न व्यवसायियों की जानकारी दें और उनके कार्यों को समझाएँ।
- विभिन्न व्यवसायियों की वेशभूषा का प्रस्तुतीकरण कराएँ।

अ. उ. ३
अ. क्ष. ३.१
अ. नि. १५

२१ फूल–पत्तों का वंदनवार (तोरण)

हमारे देश में विभिन्न त्योहार, समारोह और उत्सव मनाए जाते हैं। इसके लिए फूलों से सजावट की जाती है। कुछ व्यक्ति पत्तियों और फूलों से आकर्षक सजावटी वस्तुएँ तैयार करने का व्यवसाय करते हैं।

पत्तियों और फूलों का उपयोग करके हम भी ऐसी आकर्षक सजावट कर सकते हैं।

मेरी कृति

नीचे दी गई सामग्री का उपयोग करके दिए गए क्रमानुसार पत्तियों और फूलों का वंदनवार (तोरण) तैयार करो।

साधन और सामग्री: कैंची, धागा, सेलो टेप, आम के पेड़ की पत्तियाँ, गुलदाउदी (शेवंती), गुड़हल, कनेर, चंपा आदि फूल आदि।

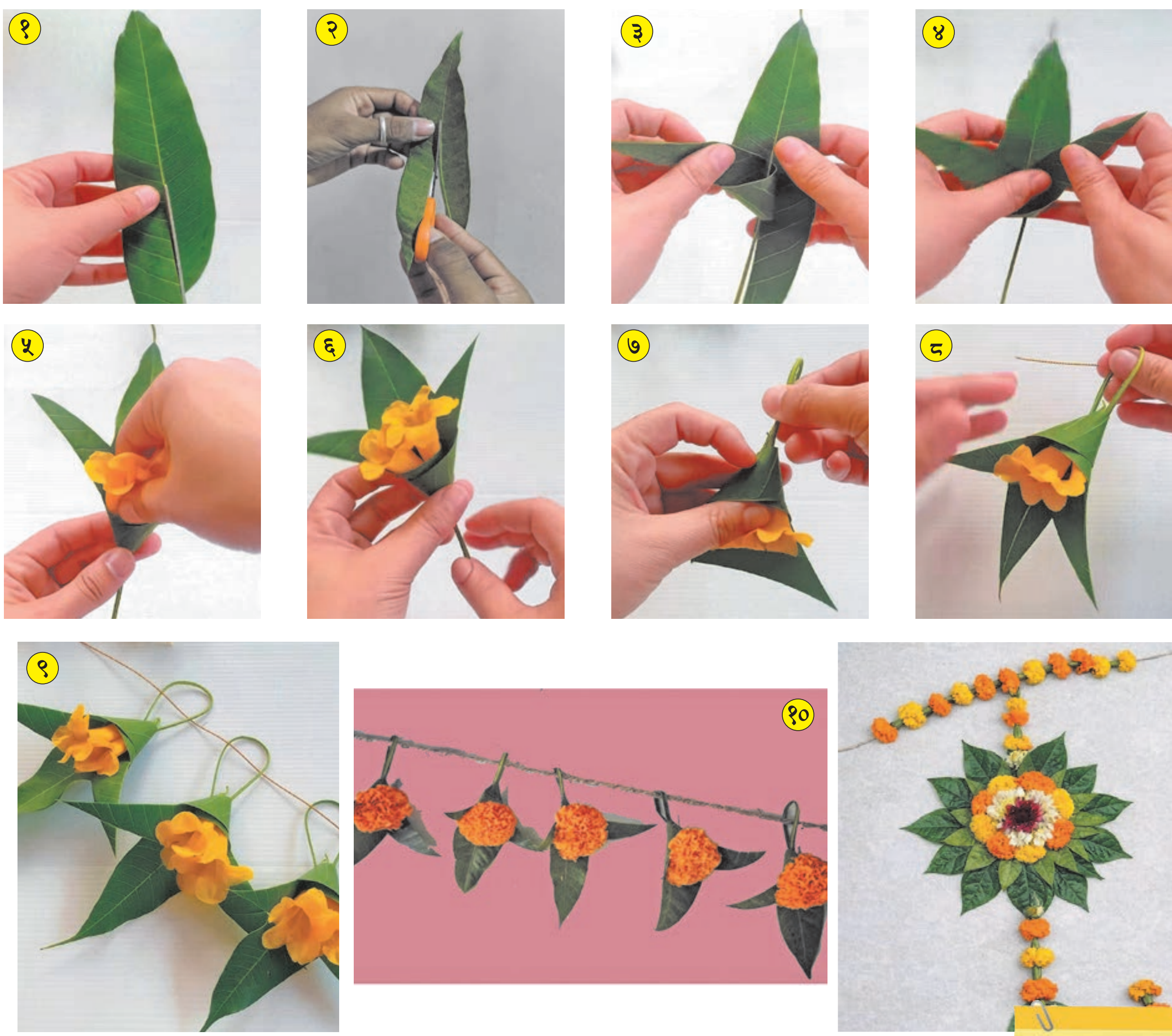

- विधि के अनुसार वंदनवार तैयार कराएँ।
- **अन्य अलग–अलग तरीकों से भी पत्तियों और फूलों के वंदनवार तैयार किए जा सकते हैं, यह बताकर विभिन्न प्रकार के वंदनवार बनवाएँ।**

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २१

२२ कृषिपूरक व्यवसाय

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। हमारे देश में लोग खेती से विभिन्न प्रकार के उत्पाद प्राप्त करते हैं।

खेती के साथ-साथ आय बढ़ाने के लिए जो व्यवसाय किया जाता है, उसे 'कृषिपूरक व्यवसाय' कहते हैं। इस व्यवसाय से किसान को आर्थिक सहारा मिलता है।

कृषिपूरक व्यवसाय :

१) कुक्कुट पालन (मुर्गीपालन) २) दुग्ध व्यवसाय ३) मशरुम उत्पादन

कुक्कुट पालन

अंडे और मांस प्राप्त करने के लिए मुर्गियाँ पालने के व्यवसाय को 'कुक्कुट पालन' कहते हैं।

व्यवसाय के लिए आवश्यक बातें :

१) अच्छी नस्ल की मुर्गियों के चूजे २) पौष्टिक आहार ३) आवास ४) पानी
५) टीकाकरण ६) उचित देखभाल

व्यवसाय के फायदे :

१) हमें पौष्टिक आहार के रूप में अंडा और मांस मिलता है।
२) मुर्गियों की बीट (विष्ठा) से जैविक खाद मिलती है।
३) मुर्गियों के पंखों से सजावटी वस्तुएँ बनाई जाती हैं। इन कारणों से रोजगार के अवसर पैदा होते हैं।

दुग्ध व्यवसाय

गाय, भैंस, बकरी इत्यादि पशुओं से दूध उत्पादन और उसकी बिक्री करके धनार्जन करना।

व्यवसाय के लिए आवश्यक बातें :

१) अच्छी नस्ल की गायें, भैंसें, बकरियाँ

२) स्वच्छ, हवादार और सुरक्षित गोशाला अथवा आवास

३) हरा चारा, सूखा चारा, संतुलित आहार और स्वच्छ पीने का पानी

४) नियमित टीकाकरण और पशु चिकित्सा सेवा

व्यवसाय के लाभ :

१) पौष्टिक आहार के रूप में दूध मिलता है।

२) दूध से दही, मक्खन, घी इत्यादि पदार्थ तैयार किए जा सकते हैं।

३) गोबर (विष्ठा) से जैविक खाद तैयार होती है।

४) दूध की बिक्री से आय प्राप्त होती है और रोजगार का निर्माण होता है।

मशरूम व्यवसाय

मशरूम उत्पादन व्यवसाय का अर्थ है- मशरूम उगाकर उसकी बिक्री करना।

व्यवसाय के लिए आवश्यक बातें :

१) मशरूम उगाने के लिए लगने वाले विशेष बीज।

२) स्वच्छ, ठंडी और अँधेरी जगह।

३) सोयाबीन, चावल और गेहूँ का भूसा।

४) नमी बनाए रखने के लिए पानी।

५) मशरूम बढ़ाने के लिए थैलियाँ।

६) स्वच्छता।

व्यवसाय के फायदे :

१) कम जगह में उत्पाद किया जा सकता है।

२) कम खर्च में शुरू किया जा सकता है।

३) उत्पाद जल्दी मिलता है।

४) अच्छा लाभ मिलता है।

५) मशरूम एक पौष्टिक भोजन है।

कुक्कुट पालन व्यवसाय

दुग्ध व्यवसाय

मशरूम व्यवसाय

२३ आधुनिक व्यवसाय

समय के साथ हमारा रहन-सहन बदल गया है। हमारी आवश्यकताएँ भी बदल गई हैं। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न आधुनिक व्यवसाय शुरू हुए हैं। इन व्यवसायों में तकनीक और नवीन युक्तियों का उपयोग करके ग्राहकों की आवश्यकताएँ पूरी की जाती हैं। व्यवसायों में नैतिकता का पालन करना आवश्यक है।

उदाहरण के लिए नीचे कुछ व्यवसाय दिए हैं। उनके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करो और लिखो।

आधुनिक व्यवसायों के उदाहरण :

१) **डिजिटल और आई टी सेवा :** संगणक, भ्रमणध्वनि और अंतरजाल का उपयोग करके लोगों की मदद करने वाली सेवाएँ।

२) **ई-कॉमर्स :** इंटरनेट पर वस्तुओं को खरीदना और बेचना।

३) **डिलिवरी आधारित रसोई (क्लाउड किचन) :** खाद्य पदार्थ तैयार करके ग्राहकों की माँग के अनुसार उन्हें घर तक पहुँचाना।

४) **इवेंट मैनेजमेंट और प्लानिंग :** शादी, जन्मदिन आदि कार्यक्रमों में सजावट करना और आवश्यक सभी चीजों की व्यवस्था कराना।

५) **सौंदर्य और स्वास्थ्य सेवा :** शरीर को सुंदर दिखाने और स्वस्थ रखने के लिए सेवाएँ प्रदान करना।

मेरी कृति

१. अपनी जानकारी वाले कुछ अन्य आधुनिक व्यवसायों की जानकारी प्राप्त करो और लिखो।

____

____

____

२. तुम्हारी जानकारी वाले व्यवसायों के चित्र इकट्‌ठे करके कॉपी में चिपकाओ और उसके नीचे व्यवसाय का नाम लिखो।

____

____

____

अ. उ. ३
अ. क्ष. ३.१
अ. नि. १६

• विभिन्न आधुनिक व्यवसायों के बारे में चर्चा/बातचीत करके जानकारी दीजिए।

२४ करें मित्रता संगणक से

आज के युग में संगणक (कंप्यूटर) हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। पाठशाला, कार्यालय आदि जैसे कई क्षेत्रों में संगणक का उपयोग किया जाता है। इसलिए संगणक की विशेषताओं और उसके उपयोगों के बारे में जानना आवश्यक है। तीसरी कक्षा में हमने संगणक के भागों के बारे में जानकारी प्राप्त की है। इस कक्षा में हम संगणक की विशेषताओं, उपयोग और किन क्षेत्रों में उनका उपयोग किया जाता है, इसके बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

मेरी कृति

१. नीचे दिए गए चौकोन में संगणक के भागों के नाम लिखिए।

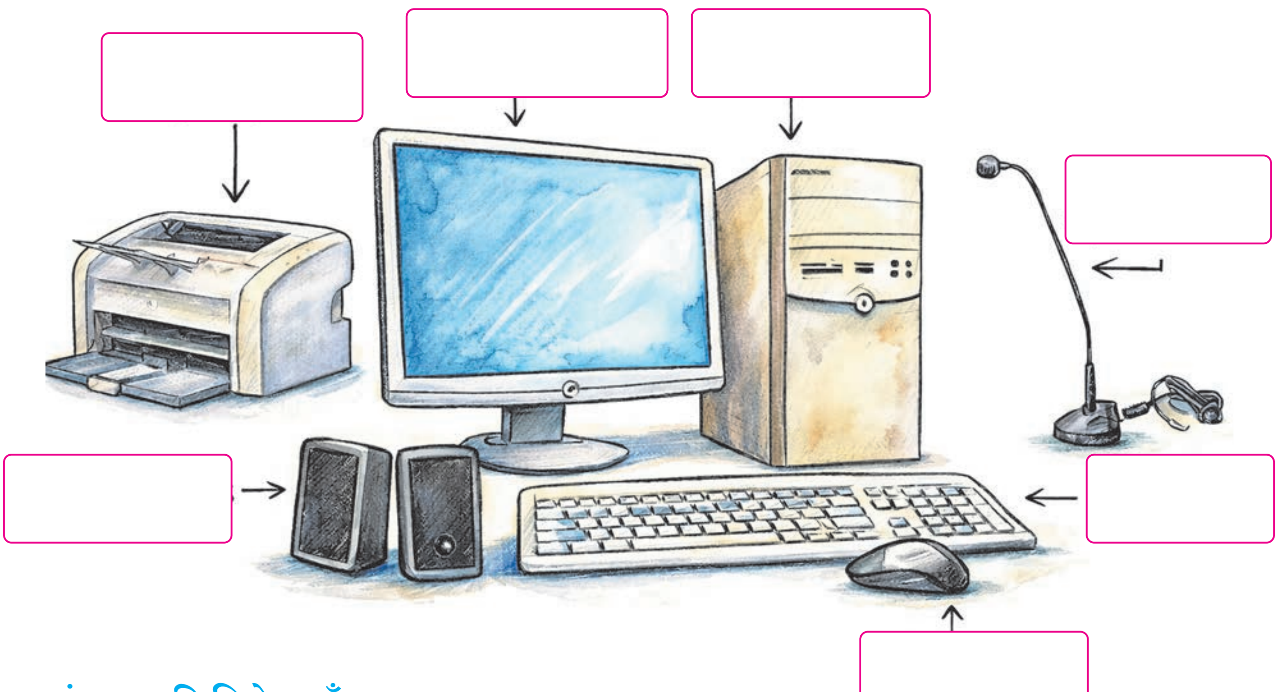

संगणक की विशेषताएँ :

१) **जानकारी प्राप्त करना और सहेजना :** संगणक द्‌वारा अंतरजाल के माध्यम से विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। प्राप्त की गई जानकारी को संगणक में सहेजकर (Save) दोबारा उपयोग किया जा सकता है।

२) **शैक्षिक खेल :** संगणक पर उपलब्ध शैक्षिक खेलों के द्‌वारा मनोरंजन के साथ सीखा जा सकता है।

३) **प्रकल्प (प्रोजेक्ट) तैयार करना :** विभिन्न प्रकल्प तैयार करने और प्रस्तुतीकरण के लिए संगणक की मदद मिलती है।

४) **चित्र बनाना :** संगणक पर उपलब्ध प्रोग्रामों की सहायता से चित्र और डिजाइन तैयार किए जा सकते हैं।

५) **गणितीय कार्य करना :** संगणक के कारण जोड़, घटाव और अन्य गणितीय क्रियाएँ करना आसान हो जाता है।

६) **लेखन कार्य :** निबंध, पत्र और तालिकाएँ (तक्ता) जैसे घटक लिखे जा सकते हैं।

२. इनके अतिरिक्त संगणक के अन्य उपयोगों के बारे में जानकारी प्राप्त करो और लिखो।

____

____

____

____

____

संगणक की विशेषताओं के कारण इसका उपयोग निम्नलिखित क्षेत्रों में किया जाता है :

१) कार्यालय	६) बैंकिंग	११) मनोरंजन
२) विज्ञापन	७) परिवहन	१२) विज्ञान और तकनीक
३) छपाई/मुद्रण	८) डॉक और टेलीफोन	१३) प्रशिक्षण
४) चिकित्सा क्षेत्र	९) व्यक्तिगत उपयोग	१४) कृषि क्षेत्र
५) शिक्षा क्षेत्र	१०) क्रीड़ा (खेल) क्षेत्र	१५) संचार-यातायात

तकनीकी साधन

संगणक की तरह ही विभिन्न तकनीकी साधनों का उपयोग किया जाता है। जैसे – जेरॉक्स मशीन, मोबाइल आदि।

३. नीचे कुछ तकनीकी साधनों के चित्र दिए गए हैं। उनके उपयोग की जानकारी प्राप्त करो और उन्हें अपने शब्दों में लिखो।

१. भ्रमणध्वनि (मोबाईल) : _______________

____

____

२. स्मार्ट वॉच – _______________

____

____

३. गणना यंत्र (कैलकुलेटर) –

४. (टेलीविजन) दूरदर्शन –

५. जेरॉक्स मशीन –

६. सी.सी.टी.वी. कैमरा –

- आधुनिक व्यवसायों में संगणक का उपयोग किस प्रकार किया जाता है, बताएँ।
- संगणक की विशेषताओं के बारे में चर्चा/बातचीत करें।
- बैंक में और रेलवे टिकट आरक्षण (रिजर्वेशन) करने के लिए संगणक का उपयोग कैसे किया जाता है, बताएँ।

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २३

२५ क्रय–विक्रय

मेरी कृति

१. शरबत

नीचे दी गई साधन–सामग्री का उपयोग करके शरबत तैयार करो।

साधन और सामग्री : नींबू १५, शक्कर १ किलो, नमक ५० ग्राम, पानी (लगभग ३५ गिलास), आवश्यकतानुसार इलायची पाउडर।

विधि :

१) नींबू धोकर उन्हें आधा–आधा काट लो।
२) पतीले में नींबू निचोड़ने की मशीन से रस निकाल लो।
३) शक्कर और नमक डालो।
४) पानी डालकर बड़े चम्मच से शक्कर घुलने तक हिलाओ।
५) इलायची पाउडर डालो।
६) गिलास में उड़ेलकर पीने के लिए दो।

क्रय–विक्रय संवाद प्रक्रिया

शिक्षिका : बच्चों, आज हमने क्या बनाया?
विद्‌यार्थी : शरबत।
शिक्षिका : सही! लेकिन कौन–सा शरबत बनाया?
विद्‌यार्थी : नींबू का शरबत।
शिक्षिका : अब हम नींबू का शरबत बनाने और उसके क्रय–विक्रय की प्रक्रिया को समझेंगे।
विद्‌यार्थी : ठीक है, बहन जी।
शिक्षिका : इसके लिए हमें कौन–कौन–सी सामग्री लगी?
विद्‌यार्थी : नींबू, पानी।
शिक्षिका : और क्या?
विद्‌यार्थी १ : शक्कर भी लगी बहन जी।
विद्‌यार्थी २ : और नमक भी।
विद्‌यार्थी ३ : हमने इलायची का पाउडर भी डाला ना बहन जी, यानी इलायची भी लगी।
शिक्षिका : शाबास बच्चों, अब बताओ ये वस्तुएँ हम कहाँ से लाए?
विद्‌यार्थी २ : बहन जी, घर से।
शिक्षिका : लेकिन माँ तो किसी दुकान से लाई होंगी ना? पैसे देकर?
विद्‌यार्थी २ : हाँ बहन जी। दुकानदार ने पैसे लेकर ही वस्तुएँ दीं।

शिक्षिका : अर्थात हमने दुकानदार से वस्तुएँ खरीदने के बाद उन्हें लाकर उनपर प्रक्रिया की। कौन-सी प्रक्रिया की, कौन बताएगा?

विद्यार्थिनी : नींबू धोए, काटे, उनका रस निकाला। उसमें शक्कर, नमक और पानी डाला।

विद्यार्थी : उसमें इलायची का पाउडर भी डाला और नींबू निचोड़ने की मशीन से रस निकालने के कारण बीज भी नहीं गिरे।

शिक्षिका : सही! यह हुई शरबत तैयार करने की हमारी प्रक्रिया। अब क्या हम यह देखें कि इसके लिए कितना खर्च आया?

विद्यार्थिनी : जी हाँ, बहन जी।

वस्तु	मूल्य
३ रु. में १ नींबू, अतः १५ नींबू का मूल्य	४५ रु.
१ किलो शक्कर	५० रु.
५० ग्राम नमक	१ रु.
पानी	२० रु.
इलायची	१० रु.

अर्थात हमें आया कुल खर्च = ४५+५०+१+२०+१०= १२६ रुपये।

सभी विद्यार्थी : हमें शरबत बनाने में १२६ रुपये का खर्च आया।

शिक्षिका : सही है, लेकिन इसमें हमें अपनी मेहनत और बर्तनों की भी कुछ कीमत जोड़नी होगी।

विद्यार्थी : सही है, तो क्या हम १४ रुपये जोड़ें? बहन जी, इससे कुल रकम एक पूर्णांक हो जाएगी।

शिक्षिका : हाँ, ठीक है। यानी १२६ + १४ = १४० रुपये खर्च हुए और इतने में कितने गिलास शरबत तैयार हुआ?

विद्यार्थिनी : ३५ गिलास हुए बहन जी।

विद्यार्थी : अर्थात ३५ गिलास के लिए १४० रुपये खर्च आया।

शिक्षिका : तो एक गिलास के लिए कितना खर्च आया, यह कैसे निकालेंगे?

विद्यार्थी : बहन जी, १४० को ३५ से भाग देकर।

विद्‌यार्थी २ : अर्थात १४० / ३५ = ४ रु.। बहन जी, एक गिलास पर ४ रु. का खर्च आया।

शिक्षिका : तो हमें १ गिलास शरबत कितने रुपये में बेचना चाहिए ताकि हमें लाभ हो?

विद्‌यार्थी : ४ रु. में बहन जी।

शिक्षिका : सोचो तो सही!

विद्‌यार्थिनी : नहीं बहन जी, ५रु. का एक गिलास, क्योंकि हमें लाभ भी होना चाहिए।

शिक्षिका : शाबास! १ गिलास ५ रु. में अर्थात ३५ गिलास के १७५ रु. जमा होंगे। इसका मतलब हमारी खरीदारी की रकम १२६ रु. और मेहनत व अन्य खर्च १४ रु., कुल मिलाकर १४० रु. हुए।

३५ गिलास शरबत बेचकर मिली बिक्री राशि १७५ रु. है। यानी हमें १७५ में से १४० घटाने पर ३५ रु. का फायदा यानी लाभ हुआ।

यह हमारी क्रय-विक्रय की पूरी शृंखला है। इस तरह आप कोई भी व्यवसाय करते समय लागत के आधार पर बिक्री की कीमत तय कर सकते हैं।

विद्‌यार्थी : जी बहन जी! अब हमें समझ आ गया कि व्यवसाय में क्रय-विक्रय कैसे किया जाता है।

आइसक्रीम की डंडियों से दीवार की सजावट

तुम्हें क्रय-विक्रय की प्रक्रिया समझ में आ गई है। उसका प्रत्यक्ष अनुभव लेने के लिए नीचे दी गई कृति करो।

२. नीचे दी गई साधन-सामग्री का उपयोग करके क्रमानुसार कृति करो और दीवार पर लटकाने वाली सजावटी कलाकृति तैयार करो।

सामग्री : १०-१५ आइसक्रीम की डंडियाँ, मोटी डोरी, मनके, बिंदियाँ, छोटे शीशे, छोटी घंटी, रंग और ब्रश।

विधि :

१) आइसक्रीम की डंडियाँ लो।

२) डंडियों को अपने मनपसंद रंग से रँगो।

३) डंडियों को चित्र के अनुसार चिपकाकर दो वर्गाकार ढाँचा तैयार करो।

४) मोटी डोरी को रंग दें और दोनों चौकोर ढाँचों को डोरी पर एक के नीचे एक चिपका दो।

५) डोरी के निचले सिरों पर घंटी और मनके बाँधो।

६) दीवार पर हुक में लटकाने के लिए डोरी के ऊपरी हिस्से में एक गोलाकार फंदा (लूप) बनाओ।

७) इन चौकोर ढाँचों पर मनके, बिंदियाँ और शीशे चिपकाकर उन्हें सजाओ।

तुम्हारा 'वॉल हैंगिंग' तैयार है।

- विद्यार्थियों से शरबत बनाने की सामग्री लाने के लिए कहें और उनसे शरबत बनाने की कृति करवाएँ।
- क्रय-विक्रय की प्रक्रिया के बारे में जानकारी दें।

आईस्क्रीम की डंडियों से सजावट

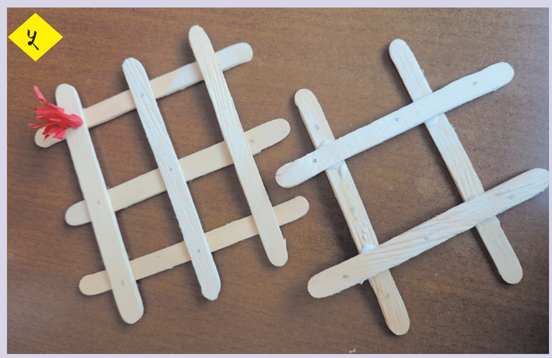

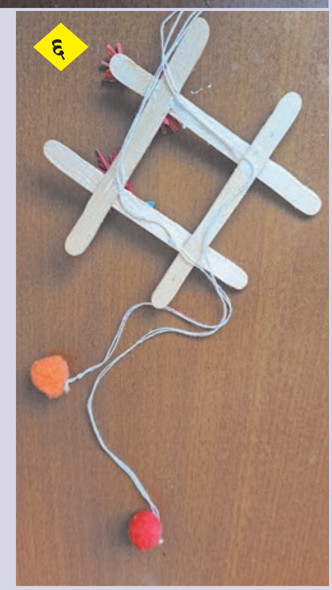

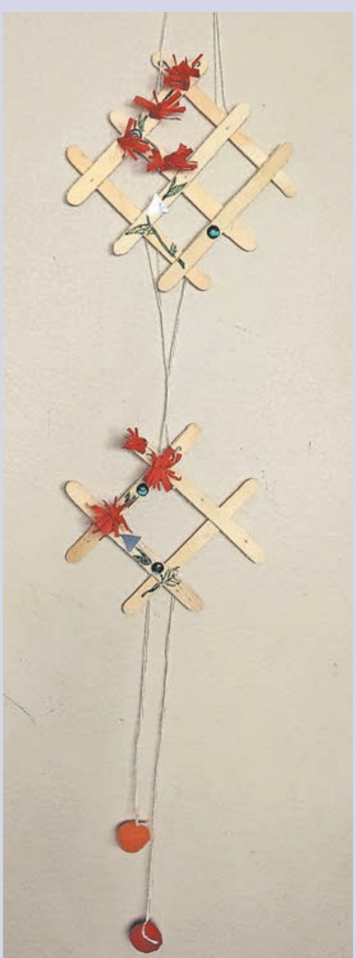

संभाषण कौशल

दैनिक जीवन में हम सतत दूसरों के साथ बातचीत करते रहते हैं। इस संवाद से अपनी भावनाओं और विचारों को स्पष्ट रूप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए उचित संवाद कौशल का होना आवश्यक है।

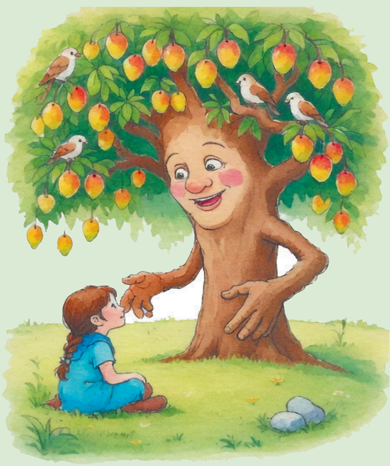

मेरी कृति

नीचे दिए गए संवाद को पढ़कर शिक्षकों की सहायता से इसका नाट्यीकरण करो।

नेहा : अरे वाह! आम भैया, तुम कितने अच्छे दिखाई दे रहे हो! तुम्हारी छाया में कितनी ठंडक महसूस होती है।

आम का पेड़ : नेहा, आओ मेरी छाया में बैठो! बहुत दिन हो गए तुम यहाँ नहीं आई।

नेहा : हाँ, शाला और पढ़ाई के कारण समय ही नहीं मिला। लेकिन गर्मी आते ही तुम्हारी याद आती है।

आम का पेड़ : (हँसते हुए) अच्छा? तुम्हें मेरे मीठे आमों की याद आती है या मेरी छाया की?

नेहा : दोनों की! तुम्हारे स्वादिष्ट फल और उनसे बनने वाले पकवान मुझे बहुत पसंद हैं।

आम का पेड़ : मुझे भी बहुत खुशी होती है जब बच्चे मेरी छाया में खेलते हैं और पक्षी यहाँ अपना घोंसला बनाते हैं।

नेहा : आम भैया, तुम बहुत उपयोगी हो। तुम फल तो देते ही हो लेकिन मेरी दीदी उन फलों से कई तरह के व्यंजन भी बनाती हैं।

आम का पेड़ : हाँ, लेकिन अब इन्सान हमें काट रहे हैं। मुझे चिंता होती है कि आगे क्या होगा?

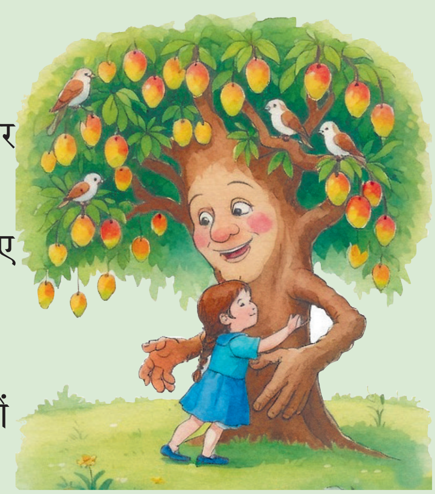

नेहा : आम भैया! तुम चिंता मत करो। मैं और पेड़ लगाऊँगी और तुम्हारी भी देखभाल करूँगी।
मैं अपनी पाठशाला के दोस्तों को भी पेड़ लगाने के लिए कहूँगी। तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो।

आम का पेड़ : मुझे तुमसे यही उम्मीद है। पेड़ बचेंगे तभी पृथ्वी बचेगी! (नेहा आम के पेड़ को गले लगाती है और दोनों खुश हो जाते हैं।)

- ऊपर दिए गए संवाद का नाट्यीकरण कराएँ।
- अन्य विषयों पर संवाद तैयार करके उनका प्रस्तुतीकरण कराएँ।
  उदाहरण: विक्रेता और ग्राहक, दाँत का डॉक्टर और मरीज, बस कंडक्टर और यात्री।

कढ़ाई हमारी एक पारंपरिक कला है। इसमें हम कपड़े पर विभिन्न प्रकार के आकर्षक नमूने तैयार कर सकते हैं। यह सुई–धागे की मदद से कपड़े पर की जाती है। इसे कशीदाकारी (भरतकाम) भी कहते हैं। अपना रूमाल आकर्षक और सुंदर दिखने के लिए रूमाल पर कढ़ाई भी की जा सकती है।

मेरी कृति

१. रूमाल पर कढ़ाई –

नीचे दी गई साधन–सामग्री का उपयोग करके शिक्षकों के मार्गदर्शन के अनुसार टाँकों के प्रकार बनाओ।

साधन और सामग्री : सूती रूमाल, विभिन्न रंगों के रेशमी धागे, सुई, कैंची, पेन्सिल, कढ़ाई की रिंग।

टाँकों के प्रकार :

१) कच्चा टाँका : 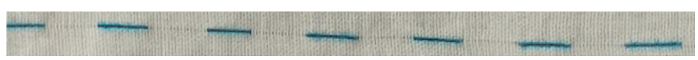

२) बखिया टाँका :

३) तुरपाई टाँका :

४) जंजीर टाँका :

२. कढ़ाई करने वाले व्यक्ति का साक्षात्कार लो और उसे अपनी कॉपी में लिखो।

- टाँकों के विविध प्रकारों को समझकर टाँके लगवाएँ।

३. मिट्टी से कछुए की प्रतिकृति

कुछ लोग मिट्टी से आकर्षक और सुंदर वस्तुएँ बनाकर बेचने का व्यवसाय करते हैं। हम भी मिट्टी से सुंदर वस्तुएँ बना सकते हैं।

नीचे दी गई साधन–सामग्री का उपयोग करके क्रमानुसार कृति करो।

साधन और सामग्री: मिट्टी, पानी, बर्तन, पेंटिंग के लिए सपाट ब्रश, नुकीली तीली, कपड़ा।

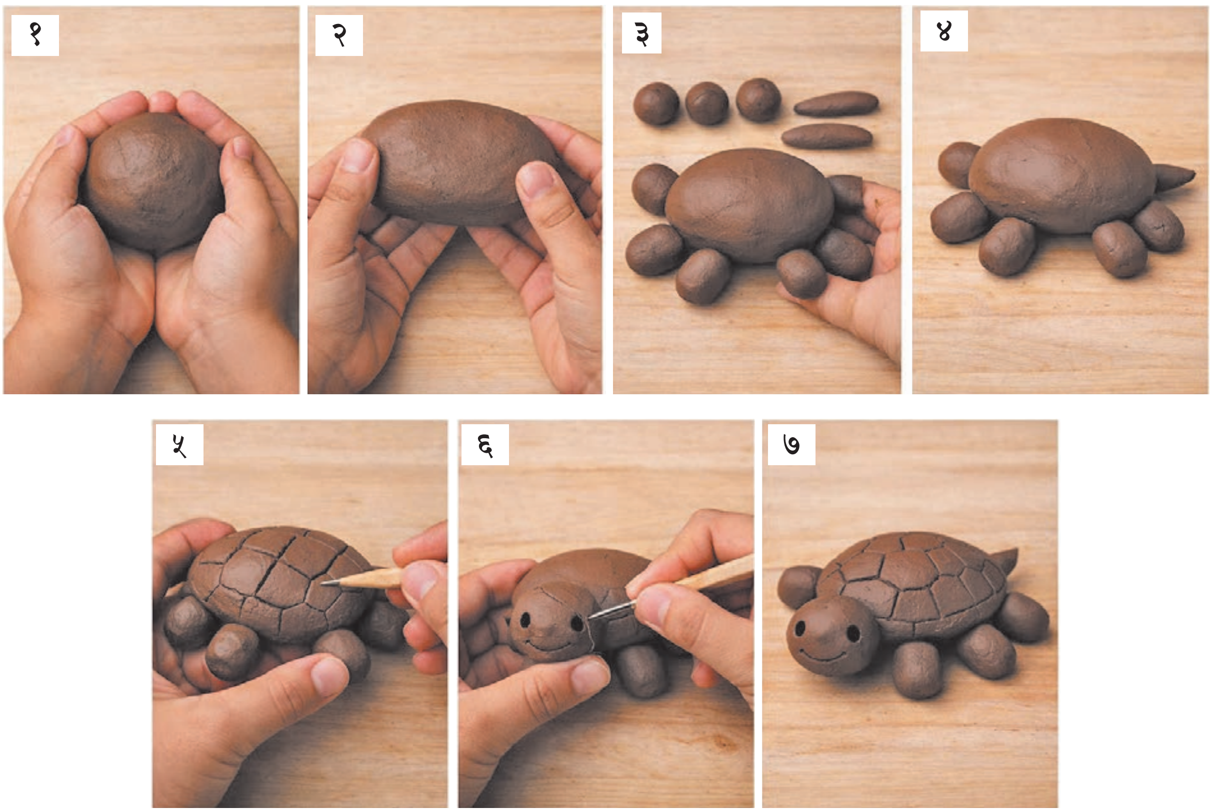

- कृतिक्रमानुसार कछुआ तैयार कराएँ।
- विद्यार्थियों को उनकी पसंद के अनुसार मिट्टी की विभिन्न वस्तुएँ तैयार करने के लिए कहें।
- तैयार की गई वस्तुओं की प्रदर्शनी आयोजित कराएँ और माता–पिता / अभिभावकों को आमंत्रित करें।
- मिट्टी का काम करने वाले कारीगर के कार्यस्थल पर क्षेत्र भ्रमण आयोजित कराएँ।
(यह उपक्रम अनिवार्य है)

अ. उ. ४
अ. क्ष. ४.१
अ. नि. २१.९

नि:शुल्क वितरण के लिए

४. समाचारपत्र से कागज की थैली बनाना

प्लास्टिक के उपयोग के कारण बड़े पैमाने पर पर्यावरण को नुकसान पहुँच रहा है इसलिए प्लास्टिक के उपयोग से बचने के लिए कागज की थैलियों का उपयोग किया जाता है। आजकल समाचारपत्रों से थैलियाँ बनाने का व्यवसाय किया जाता है। हम भी समाचारपत्रों से थैलियाँ बना सकते हैं।

नीचे दी गई साधन-सामग्री का उपयोग करके कृति क्रमानुसार थैली तैयार करो।

साधन और सामग्री: पुराने समाचारपत्र, पंचिंग मशीन, मोटा धागा, गोंद इत्यादि।

- ऊपर दिए गए क्रम के अनुसार कृति करवाकर विद्यार्थियों से समाचारपत्र या रंगीन कागज की थैलियाँ बनवाएँ।
- तैयार की गई थैलियाँ शिक्षकों को भेंट देने के लिए कहें।

५. भेंट कार्ड

साधन और सामग्री– विभिन्न रंगों के फूल, पत्तियाँ, घास, टहनियाँ, गोंद, स्केच पेन, कैंची, कार्ड पेपर आदि।

कृति –

१. विभिन्न रंगों के छोटे-बड़े फूल, पत्ते, घास, टहनियाँ और डालियाँ इकट्ठा करो।

२. इन पत्तियों, फूलों, घास और टहनियों को समाचारपत्र के पन्नों में लपेट कर रखो।

३. दो पीढ़ा लो उनके बीच या बिस्तर और गद्दे के बीच ८-१० दिनों के लिए रख दो ताकि पत्तियाँ, फूल और घास पूरी तरह से सूख जाएँ। इस प्रकार तैयार किए गए सूखे पौधों के नमूनों को **'हर्बेरियम'** कहा जाता है। इनका उपयोग वनस्पति विज्ञान के अध्ययन में किया जाता है।

४. भेंट कार्ड बनाने के लिए एक उचित आकार की घड़ी करने योग्य रंगीन कार्ड पेपर लो। उसे मोड़ते हुए गिफ्ट कार्ड के लिए उचित आकार दो।

५. रंगीन स्केच पेन से कार्ड पेपर का किनारा बनाओ।

६. किनारे के अंदर पत्तियों, फूलों और घास की एक सुंदर आकृति बनाओ। उस पर पत्तियों, फूलों और घास को चिपकाओ।

७. आवश्यकतानुसार स्केच पेन से सजावट करो।

८. इसके अंदर उचित संदेश लिखो।

६. कागज का लिफाफा बनाना

डाक से राखी, पत्र, आवेदन, महत्त्वपूर्ण दस्तावेज/पैसे भेजने के लिए एक ही आकार के दो लिफाफों की जरूरत होती है।

अलग-अलग माप के कागज लेकर लिफाफे बनाए जा सकते हैं।

साधन और सामग्री : २० सेमी x २१ सेमी आकार का कागज, पट्टी, पेन्सिल, कैंची, गोंद, स्केचपेन आदि।

कृति –

१. २० सेमी x २१ सेमी का एक कागज लो। इसे क्षैतिज रूप से पकड़ो।

२. पट्टी से मापकर १ सेमी के अंतर पर एक रेखा खींचो।

३. १ सेमी की रेखावाला भाग छोड़कर कागज के दो समान भाग कर लो।

४. इसे बीच से मोड़ो।

५. तह खोलो। किनारे वाले हिस्से पर, ऊपर से २ सेमी ऊपर एक क्षैतिज रेखा खींचो और इस हिस्से को काट लो।

६. उसी हिस्से पर, नीचे से १ सेमी ऊपर एक क्षैतिज रेखा खींचो और इसे काट लो। अब दूसरा हिस्सा बड़ा दिखाई देगा।

७. दोनों तहों को फिर से मोड़ो और १ सेमी वाले हिस्से को दूसरे हिस्से पर चिपका दो।

८. नीचे वाले हिस्से के १ सेमी वाले हिस्से को, ऊपर वाले हिस्से पर चिपका दो।

९. ऊपर वाले हिस्से के २ सेमी वाले हिस्से को मोड़ो। बटुआ तैयार है।

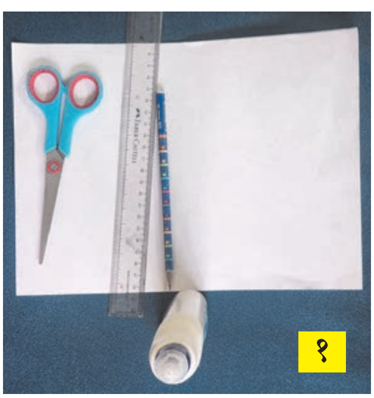

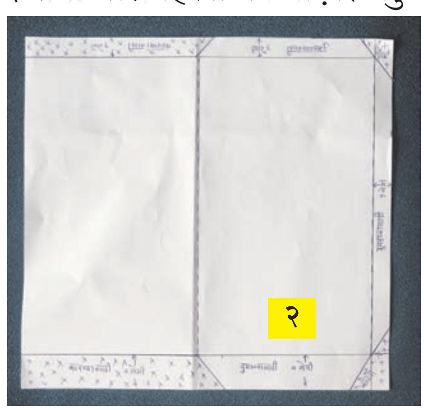

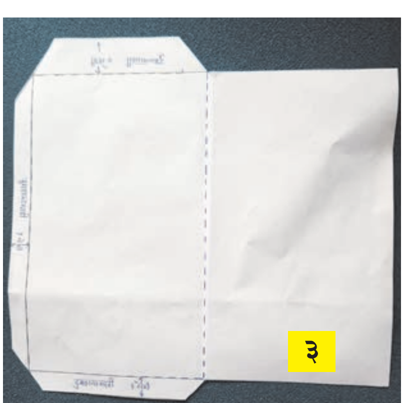

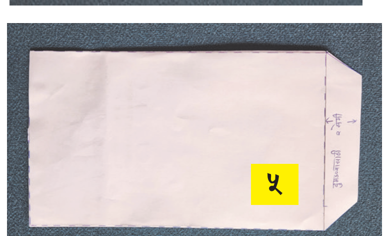

७. भिंगरी

साधन और सामग्री– कार्डबोर्ड या मोटा सफेद कार्ड पेपर, टूथपिक, एक सेंटीमीटर चौड़ी और दो इंच लंबी कागज की दो पट्टियाँ, वॉटरकलर या स्केच पेन, कैंची, ब्रश, गोंद आदि।

कृति –

१. कार्ड पेपर पर दो सेंटीमीटर त्रिज्या का एक वृत्त बनाओ और उसे काट लो।

२. इस वृत्त को आठ बराबर भागों में विभाजित करो।

३. प्रत्येक भाग को अलग-अलग रंग दो- लाल, पीला, हरा, नीला, नारंगी, आसमानी नीला, बैंगनी।

४. तैयार डिस्क के बीच में कंपास से एक छेद करो।

५. इस छेद में एक टूथपिक डालो ताकि रंग ऊपर की ओर आ जाए। टूथपिक की नोक को नीचे की ओर रखो।

६. टूथपिक के ऊपर और नीचे कागज की एक पट्टी लपेटो और उसे चिपका दो।

७. जब आप भिंगरी को घुमाओगे, तो सभी रंग आपस में मिल जाएँगे और डिस्क पर एक सफेद रंग दिखाई देगा। इससे पता चलता है कि सभी रंग सफेद रंग में मिश्रित हैं।

रंगों के अतिरिक्त, एक काले स्केच पेन से डिस्क पर अलग-अलग आकृतियाँ बनाएँ और भिंगरी के घूमने पर उभरने वाली आकृतियों का आनंद लो।

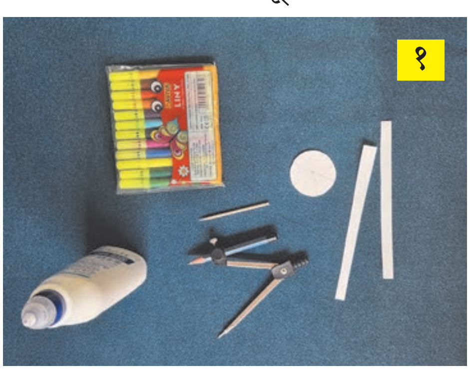

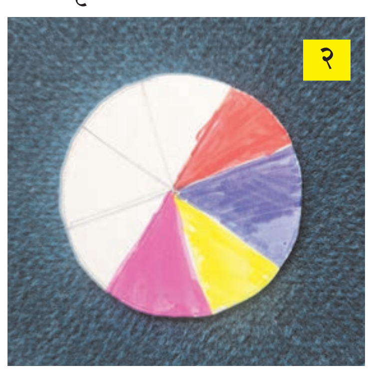

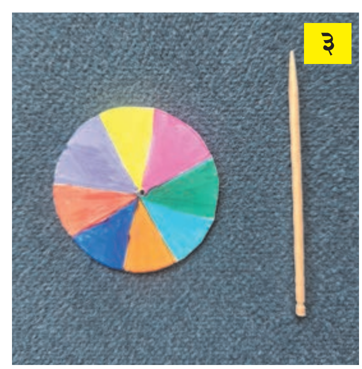

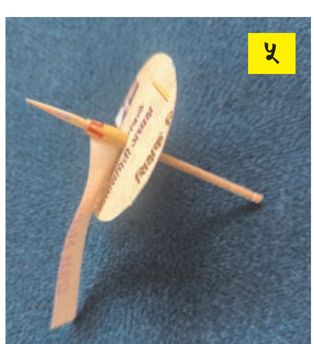

८. बाँस की पट्टियों से ज्यामितीय आकृतियाँ बनाना

साधन और सामग्री– छोटी और बड़ी बाँस की पट्टियाँ, गोंद आदि।

कृति –

१. बाँस की छोटी और बड़ी पट्टियाँ लो।

२. त्रिभुज, वर्ग, आयत, पंचभुज, षट्भुज आदि जैसी आकृतियाँ बनाने के लिए पट्टियों को आपस में चिपकाओ।

३. इन आकृतियों का एक साथ उपयोग करके एक सुंदर डिजाइन बनाओ।

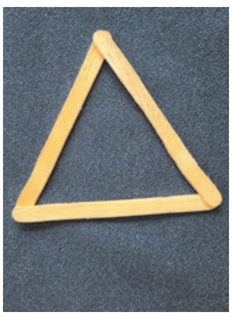

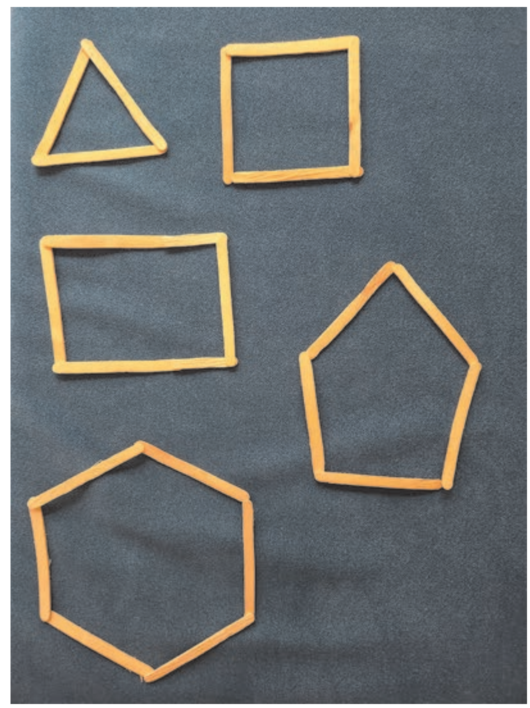
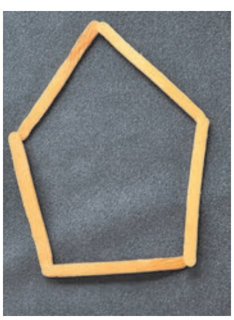
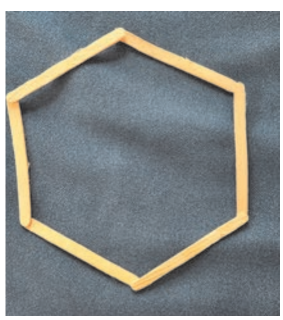

९. सुतली (नारियल की रस्सी) के उपयोग

हम सुतली से बनी कई चीजों का उपयोग करते हैं। ऐसी कौन-कौन-सी वस्तुएँ चित्र में दिखाई दे रही हैं ढूँढ़ो और उनके उपयोग लिखो।

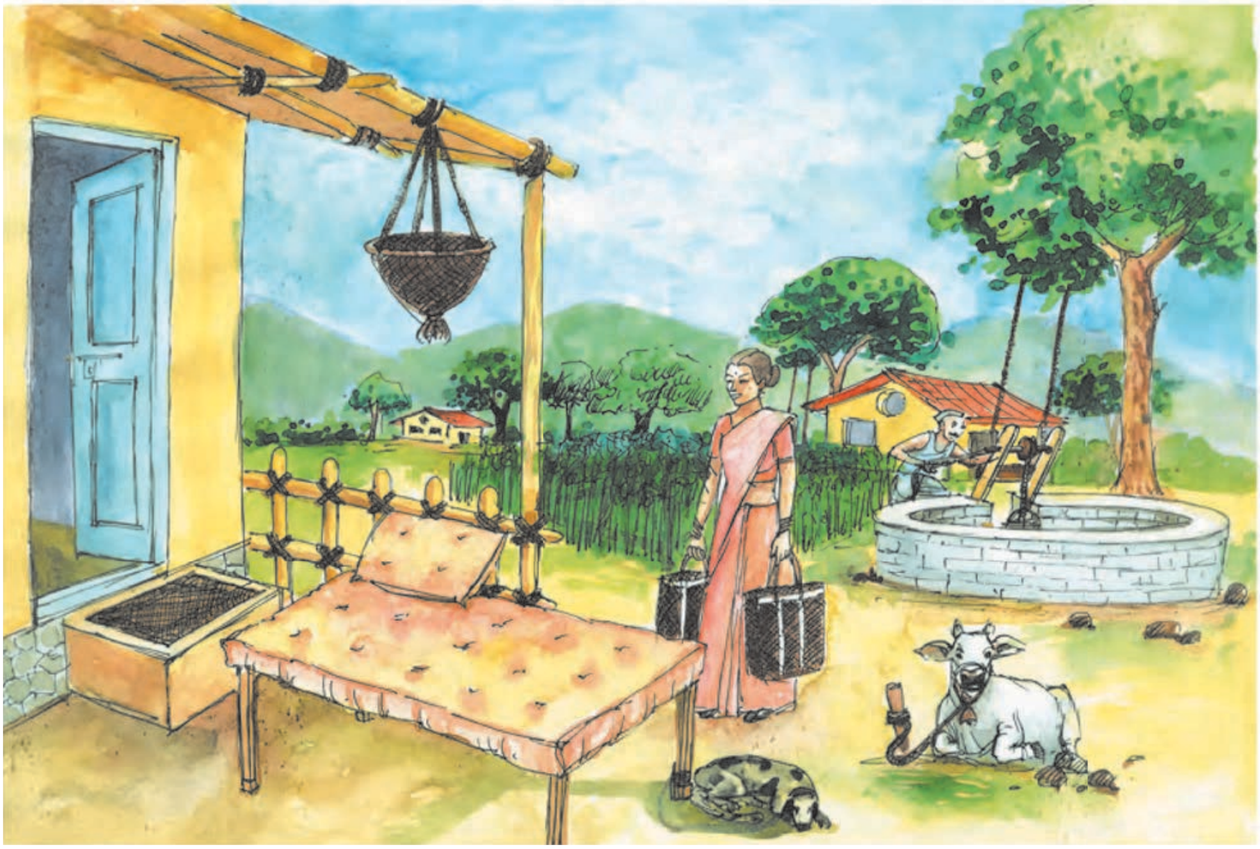

वस्तु				
उपयोग				

टाचनी लगाने के लिए डिब्बी

साधन और सामग्री– बेकार पड़ी प्लास्टिक की डिब्बी, रंगीन कपड़ा, गोंद, सुई, धागा आदि।

कृति –

१. बरतन में समा सकने लायक सुतली लो उसे हाथों से कसकर दबाकर एक गेंद बना लो। बीच-बीच में गोंद से चिपका दो।
२. रंगीन कपड़े को गेंद के चारों ओर लपेटो और उसे कसकर बाँध दो या सिल दो।
३. बंधे या सिले हुए हिस्से को गोंद की मदद से डिब्बे के अंदरूनी हिस्से से चिपका दो।
४. बॉक्स को टिकली और लेस से सजाओ।
५. टाचनी खोंसकर रखने के लिए इसका उपयोग करो।

१०. उड़ने वाला कीट

साधन और सामग्री– २० सेमी x ३ सेमी आकार का कार्डपेपर की पट्टी, लाल और पीले कागज के टुकड़े, काला स्केच पेन, गोंद, कैंची आदि।

कृति –

१. २०सेमी x ३ सेमी माप की एक पट्टी लो और उसे बीच से मोड़ो।

२. चित्र में दर्शाए अनुसार मुड़े हुए हिस्से को मोड़ो और खोलो।

३. बनी हुई त्रिभुजाकृति को अंदर की ओर मोड़ो। पट्टी के ऊपरी हिस्से को नीचे की ओर मोड़ो।

४. लाल कागज का एक वृत्त काटो और उसे बीच से दो भागों में बाँट दो। इन टुकड़ों को चित्र में दर्शाए अनुसार चिपका दो।

५. पीले कागज के दो पंखुड़ी के आकार के टुकड़े काटो और उन्हें लाल कागज के टुकड़ों के नीचे चिपका दो।

६. पीले रंग के कार्ड पेपर का एक कीट के शरीर के आकार का टुकड़ा काटो जो कार्ड पेपर पर फिट हो जाए और उसे लाल और पीले टुकड़ों के बीच चिपका दो या उसे पीले रंग से रँग दो।

७. लाल पेपर के अर्धवृत्तों पर काले रंग के स्केच पेन से बिंदु बनाओ।

८. लाल अर्धवृत्तों के ऊपर वाले हिस्से में कार्ड शीट पर सिर, आँखें और नाक बनाओ।

जब तुम कार्ड पेपर को दोनों हाथों से खींचकर बंद करोगे, तो तुम्हें एक लाल कीड़ा उड़ता हुआ–सा लगेगा।

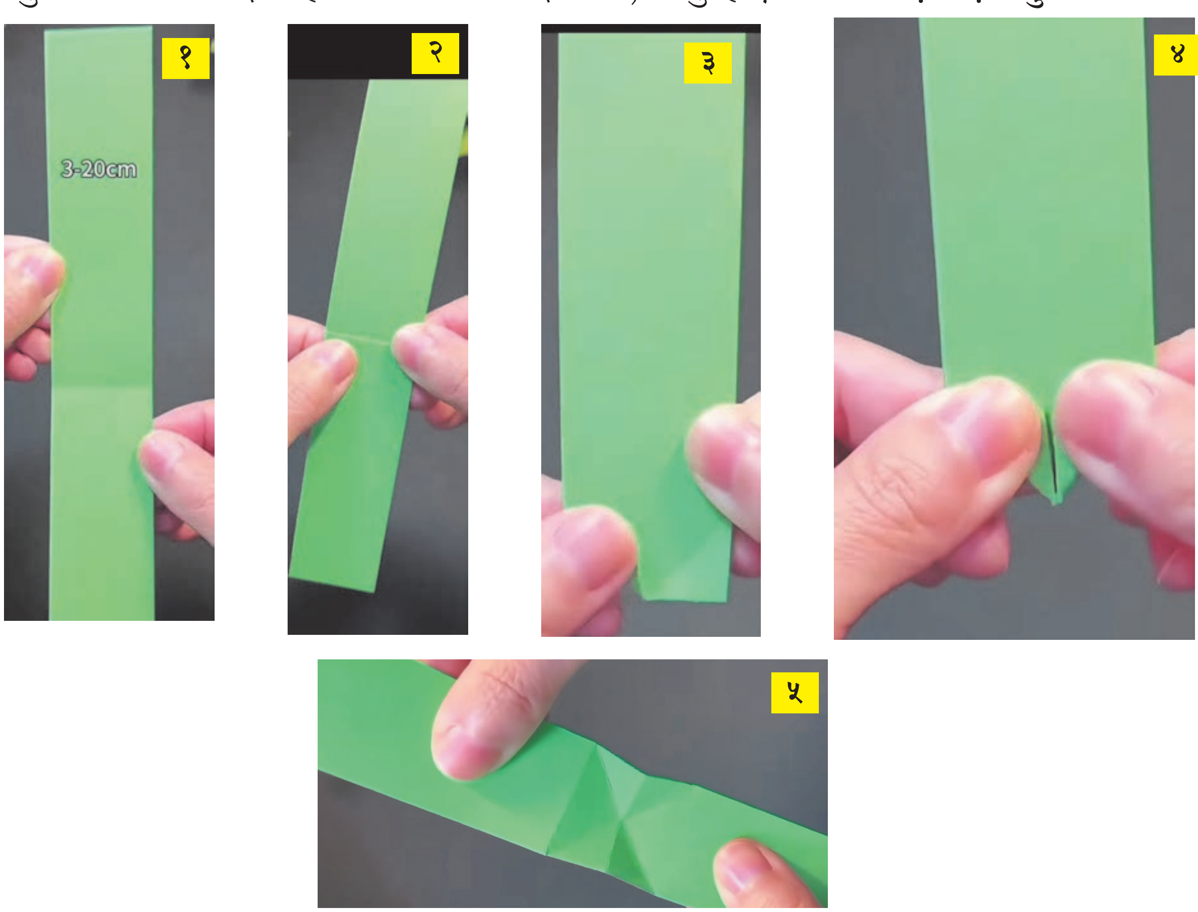

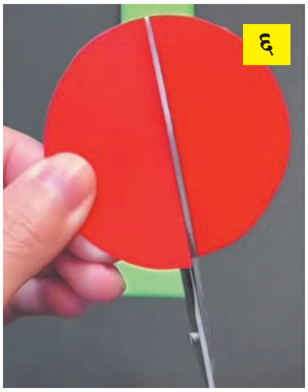
६

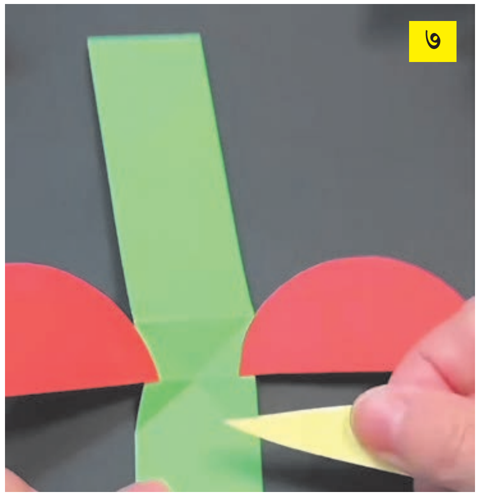
७

८

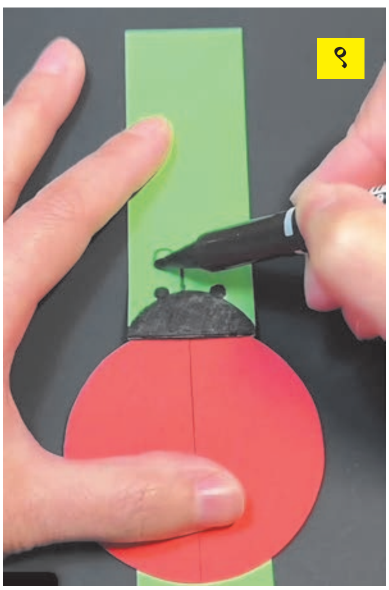
९

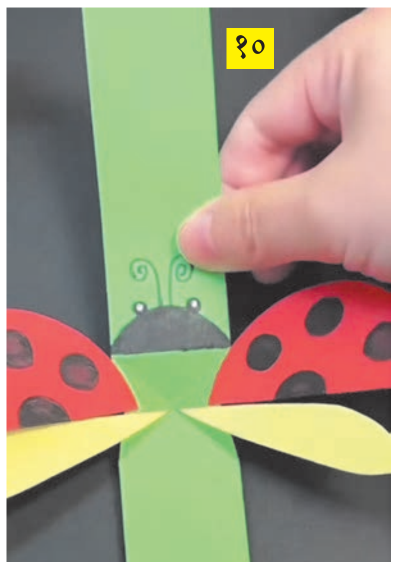
१०

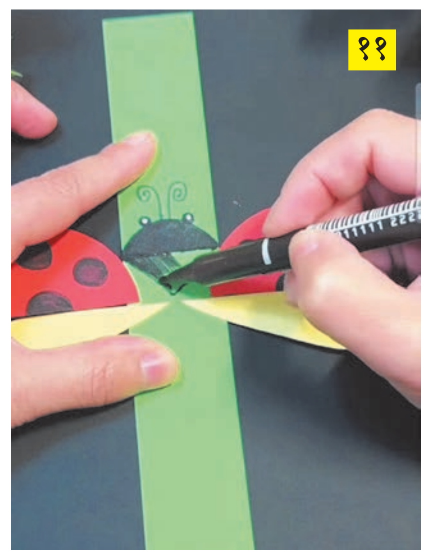
११

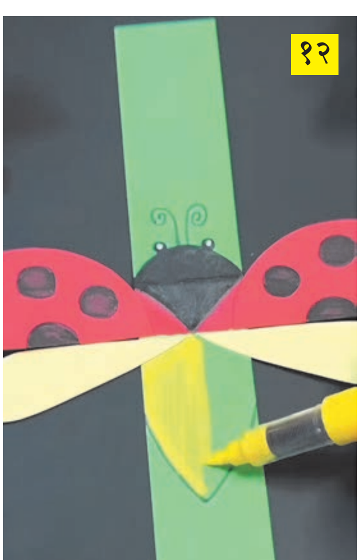
१२

१३

११. माचिस की डिब्बी वाली ट्रेन

साधन और सामग्री– पाँच खाली माचिस की डिब्बी, बटन, सफेद कागज, गोंद।

कृति –

१. माचिस की डिब्बियों को उनके भीतरी डिब्बों से अलग करो। ऊपर के पाँचों हिस्सों पर सफेद कागज चिपका दो।

२. माचिस की डिब्बियों को चित्र में दिखाए अनुसार व्यवस्थित करो।

३. डिब्बों के निचले हिस्से में बटन चिपका दो।

४. ट्रेन का अगला हिस्सा बनाने के लिए ४ सेमी चौड़ी कागज की एक पट्टी लो, उसे रोल करो और क्षैतिज भाग पर चिपका दो। इस रोल पर एक सेमी और आधा सेमी चौड़ी दो पट्टियों को लंबवत चिपका दो।

५. चित्र में दर्शाए अनुसार एक बाहरी भाग और एक आंतरिक भाग को पीछे की ओर चिपका दो। सभी भागों को आपस में जोड़कर एक ट्रेन बना लो।

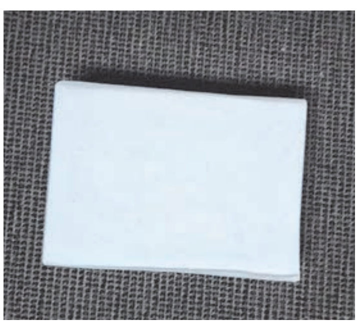

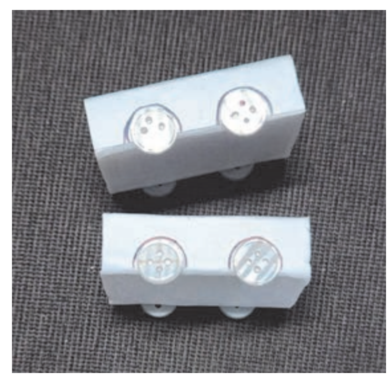
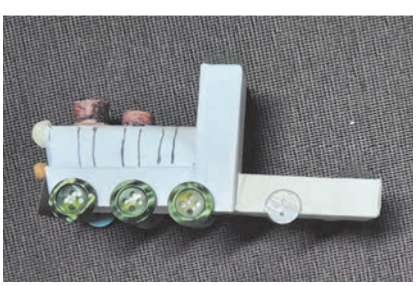

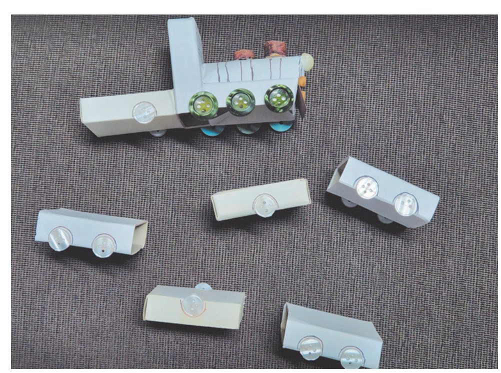
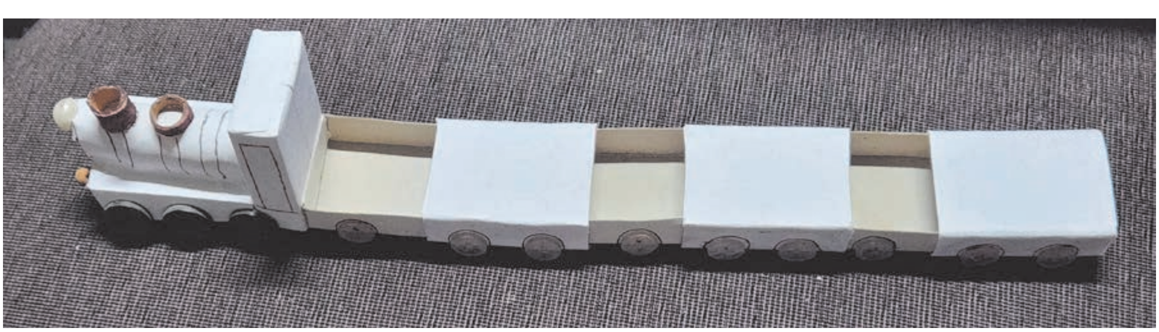

मेरा प्रिय व्यवसाय

प्रिय विद्यार्थी मित्रो और सहेलियो,

यदि तुम्हें कोई अयोग्य ढंग से स्पर्श करता है और तुम असमंजस या असहज अनुभव करते हो तो तुम कदापि चुप मत रहो। ऐसी घटना होने पर तुम्हें निम्न बातें करना आवश्यक है।

१) स्वयं को दोष मत दो।

२) जिन लोगों पर तुम्हें विश्वास है; उनसे घटित घटना के बारे में बताओ।

३) तुम पॉक्सो ई-बॉक्स के माध्यम से तुम्हारे अधिकारों की रक्षा हेतु स्थापित राष्ट्रीय आयोग को भी सूचित कर सकते हो।

जब कोई तुम्हें अनुचित/अयोग्य ढंग से छूता है/स्पर्श करता है तब तुम्हें बुरा लग सकता है। तुम परेशान और भ्रमित हो सकते हो। तुम स्वयं को असहाय महसूस कर सकते हो परंतु तुम्हें 'बुरा' लगने का कोई कारण नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसी घटना में तुम्हारा कोई दोष नहीं होता है।

इस बटन को दबाओ।

POCSO यह e-box ncpcr@gov.in इस वेबसाईट पर उपलब्ध है।

यदि तुम्हारी आयु १८ वर्ष से कम है और तुम्हें किसी ने सताया है/ तंग किया है और तुम कुछ समझ नहीं पा रहे हो, चिंतित अथवा तनावग्रस्त महसूस कर रहे हो अथवा इस प्रकार की परेशानी अनुभव करने वाले किसी लड़का/लड़की को जानते हो तो तुम १०९८ (दस नौ आठ) पर संपर्क करो। ऐसा करने से तुम्हारा और तुम्हारे मित्रों/सहेलियों का जीवन बदल सकता है।

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY

चाइल्ड लाइन १०९८ (दस नौ आठ) : यह २४ घंटे टोल फ्री राष्ट्रीय आपातकालीन फोन सेवा है। महिला एवं बालविकास मंत्रालय द्वारा पीड़ित लड़कों/लड़कियों के लिए यह उपक्रम चाइल्ड लाइन फाउंडेशन ने प्रारंभ किया है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

विद्यार्थियों को उनके आयुगुट के अनुसार अच्छा स्पर्श और बुरा स्पर्श पहचानने के लिए शारीरिक एवं भावनिक दृष्टि से मार्गदर्शन करें।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

कार्यशिक्षण इयत्ता चौथी (हिंदी माध्यम)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

(नि:शुल्क वितरण के लिए)